विद्या भवन खोजख़बर

वर्ष–9 | अंक–31 | जुलाई, 2022–दिसम्बर, 2022

www.vidyabhawan.in

कक्षा-कक्षीय अंतःक्रियाओं की समीक्षा

विद्या भवन और नवलगढ़ स्कूलों के शिक्षकों और प्रोफेसर रमाकांत के बीच भाषा शिक्षण पर चर्चा का यह दूसरा भाग है। चर्चा का पहला भाग– जो पिछले न्यूजलेटर में प्रकाशित हुआ था– इस बात पर केंद्रित था कि बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं। ऑनलाइन चर्चा के दूसरे भाग में अंग्रेजी भाषा के कक्षा–कक्ष अभ्यास की समीक्षा पर केंद्रित था।

✎ ज्योति (नवलगढ़ शिक्षिका): कर्सिव राइटिंग अंग्रेजी कक्षाओं में एक आम अभ्यास है। यह बच्चों के लेखन में सुधार करने में मदद करता है। इसमें सुधार होता है क्योंकि अन्यथा बच्चों को केवल बड़े अक्षरों में लिखना पड़ता है। यह लेखन को धीमी गति कर देता है। कर्सिव अक्षरों में लिखने से भी बच्चे बेहतर तरीके से भाषा सीखते हैं। कर्सिव राइटिंग भाषा सीखने को खूबसूरत एहसास देती है।

✎ प्रो. रमाकांतः कर्सिव राइटिंग में क्या खूबसूरत है? आप एक लेखन को सुंदर अनुभव के रूप में कैसे देखते हैं?

✎ अनु चौरसिया (वीबीएस): कर्सिव राइटिंग के बारे में हम अपने स्कूल के दिनों से जानते हैं। यह अंग्रेजी सीखने का अभिन्न अंग है। हम केवल उसी का अनुसरण कर रहे हैं जो हमने स्कूल में एक छात्र के रूप में अंग्रेजी सीखते समय अनुभव किया है। बड़े अक्षरों में लिखने की तुलना में कर्सिव राइटिंग इसे सुंदर बनाती है। यहां तक कि घर पर मेरे बच्चे भी कर्सिव अक्षरों में लिखना सीख रहे हैं। कृपया हमें कर्सिव राइटिंग के बारे में अधिक जानकारी दें जिससे इस पर हमारे मौजूदा ज्ञान में वृद्धि होगी।

✎ भवन (नवलगढ़) : कर्सिव राइटिंग एक क्रिएटिव प्रैक्टिस है। यह बच्चों को लिखना सीखते समय उनकी कलात्मक प्रवृत्ति पहचाने में मदद करता है। यह लिखने की गति में सुधार करने में सहायता करता है। कर्सिव राइटिंग का अभ्यास करने पर मोटर कौशल भी बेहतर हो जाता है।

✎ प्रियांक सोलंकी (वीबीएस): मैं देखती हूं कि बच्चे भी कर्सिव राइटिंग का आनंद लेते हैं।

✎ वर्षा (नवलगढ़) : यह आंखों और हाथों के समन्वय को बेहतर बनाता है।

✎ रुबीना (वीबीएस): कर्सिव राइटिंग लिखने की गति में सुधार के साथ-साथ स्पेलिंग को बेहतर तरीके से सीखने में मदद करती है।

✎ वर्षाः यहां तक कि यह सीखने में भ्रम से निपटने में मदद करता है।

✎ प्रो. रमाकांतः क्या भ्रम है?

✎ वर्षाः कर्सिव राइटिंग भ्रम से निपटने में मदद करता है।

✎ प्रो. रमाकांत : स्पष्ट नहीं है कि कैसे कर्सिव राइटिंग भ्रम से निपटने में मदद करती है। उदाहरण के लिए, यदि मैं कर्सिव राइटिंग में 'p' लिखता हूं, तो यह कैपिटल लेटर के रूप में लिखने पर भी 'P' रहेगा। कर्सिव राइटिंग से उलझन कैसे दूर होगा। और उस भ्रम की प्रकृति क्या है। अब आप सभी मेरे प्रश्न का उत्तर दे- क्या हमें लगता है कि किसी समय लोगों ने कर्सिव राइटिंग शुरू करने के पीछे शुरू करने का कोई कारण था?

✎ भावनाः यह केवल बड़े अक्षरों में लिखने के अलावा, छात्र के लेखन में सुधार के लिए शुरू हुआ होगा।

✎ ज्योतिः मुझे इंटरनेट पर कर्सिव राइटिंग की वजह का जवाब नहीं मिल पाया।

✎ दिव्याः इसे शुरू किया गया था (जैसा कि यह एक वेबपेज पर दिखाई देता है) पाठ लिखने के लिए स्याही में पेन को बार-बार डुबो कर लिखना आसान बनाने के लिए। यह समझ में आता है क्योंकि फाउंटेन पेन का आविष्कार नहीं हुआ था।

✎ प्रो. रमाकांतः दिव्या द्वारा कर्सिव राइटिंग शुरू करने के उद्देश्य को देखते हुए, आज इसका कितना महत्त्व है। खासकर जब इसका उद्देश्य बच्चों को अपने आसपास की भाषा की व्याख्या करना सिखाना है। अब अखबार, विज्ञापन में अधिकांश लेखन बड़े अक्षरों में होते हैं। फिर कर्सिव राइटिंग क्यों सिखाई जाए? हम छात्रों का समय बर्बाद कर रहे होंगे। स्याही में बार-बार कलम डुबाना अब इतिहास हो गया है। कर्सिव का मूल अर्थ गति है। ठीक ही कहा गया है- यह लेखकों को लिखने की गति सुधारने में मदद करने के लिए था। ये सभी मुद्दे इन दिनों बेमानी हैं।

शेष पृष्ठ 16 पर...

सम्पादकीय...

विद्या भवन और नवलगढ़ स्कूलों के शिक्षकों की प्रो. रमाकांत अग्निहोत्री के साथ भाषा शिक्षण पर चर्चा का दूसरा भाग इस अंक में प्रस्तुत किया गया है। ऑनलाईन चर्चा के इस भाग में अंग्रेजी भाषा के कक्षा-कक्ष अभ्यास की समीक्षा है जो यह समझ बनाने पर केन्द्रित है कि बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं।

इसके साथ ही विद्या भवन में रमा मेहता ट्रस्ट के माध्यम से उभरती लेखिकाओं को प्रोत्साहित किया गया। कई रचनाकारों को लिखने का मौका मिला और कई रचनाकारों का सम्मान भी हुआ। सृजनात्मक लेखन का सिलसिला और आगे बढ़ाया जाएगा और दूसरे प्रांतों को भी इससे जोड़ा जाएगा, इसी मंशा से आगे आवेदन मांगे गए हैं। शबद शाला कबीर प्रोजेक्ट के तहत पाठ्यक्रम में शामिल प्रमुख संतों के मौलिक उद्देश्यों को छात्रों तक संगीत एवं अन्य गतिविधियों से पहुंचाना वाकई सराहनीय है।

शैक्षिक प्रयोगों की कड़ी में विद्या भवन में पुस्तक प्रदर्शनी लगी। प्रदर्शनी से यह समझ देने की कोशिश की गई कि किस तरह पुस्तकों का यह संग्रह नवाचारों को दर्शाता है। विद्यार्थियों को पिछली दो शताब्दियों के भारत और भारतीय उपमहाद्वीप में उपयोग लाई गई पुस्तकों का संकलन देखने को मिला वहीं शिक्षकों को यह विश्लेषण करने का मौका मिला कि गुणवत्तापूर्ण पाठ्यपुस्तकें वास्तव में होती कैसी हैं, समय-समय पर पुस्तकें किस तरह से लिखी गई हैं और लेखन में किस तरह के बदलाव आए। यह अपने आप में एक अनूठा आयोजन था।

संपादन
गिरीश शर्मा
कामिनी उपाध्याय ✦ अंजना राव

सलाहकार
प्रसून कुमार

ले-आउट एवं डिजाइनिंग
एस. एम. इकराम

Mother tongue is a gateway to thinking...

The debate about the mother tongue as a medium of instruction in schools is old. Linguists have been arguing in its favour. Recently, the new National Education Policy (NEP) 2020 recommended it. But despite its overwhelming importance, many believe that knowing English is the only gateway to a decent career. There is no problem in such a position per se as English language knowledge has known advantages, particularly now that it has become a universal lingua franca. The only word of caution lies in overemphasising it at the cost of not knowing the mother tongue: the language of primary communication for all of us. Further, promoting English in India as a medium of communication alone in school has the potential to fuel inequality skewed against children with limited means at home.

Mother tongue is a gateway to thinking. Without the knowledge of the mother tongue, most children will miss the critical link between the immediate environment and general cognition. Day-to-day life experience adds to human cognition that the mother tongue captures so well. It is so critical that teaching in all the subject domains starts with the child's experience before they are in school. All knowledge discipline pedagogy wants the teacher to start from a child's lived experience. Even for learning languages, the mother tongue is important as it helps to internalise deep language structures. Now, with the idea of languages having a universal structure, the role of the mother tongue is well established. Universal language structure internalises the best with maximum opportunity to use it. And it is the mother tongue that helps the child to build the language structure through its use. Stopping or discouraging a child from using their mother tongue is a long-term cognitive loss. With a mother tongue, a child learns the basics of languages making learning a new language relatively easily.

Another related problem is people making English knowledge look narrow—limiting it by equating it with the ability to speak it. Knowing a language is not only the ability to speak it. It involves many more skills to know a language: phonology, its syntax, and its semantics. Therefore, to know a language a child must know using it to acquire knowledge across disciplines. Language is the gateway to acquiring knowledge.

The best example of the precedence of knowledge over language comes from a famous Marwari trader—Govindram Seksaria. We know about him as the teacher training college has his name—Govindram Seksaria Teacher Training College (GSTC). He gave Vidya Bhawan the seeding money to start college. He lived in the early '30s in Nawalgarh—that time, a remote Rajasthan location. Despite the remoteness of his location, and language limitation—he only knew Marwari— he was the authority worldwide on the cotton trade. It led to his becoming a member of the New York stock exchange. Cotton traders would travel—in those days travelling was not easy—from different parts of the world came to get tips from him on its trading. It led him set up a business empire—that continues even now.

(Prasoon Kumar)
Educational Advisor, Vidya Bhawan

विद्या भवन सीनियर सैकण्डरी स्कूल, फतहपुरा

विद्याभवन सीनियर सैकण्डरी स्कूल का नवीन सत्र 2022-23 01 जुलाई से प्रारंभ हुआ। प्रथम दिन प्रातः कालीन सभा में नवआगन्तुक के साथ सभी विद्यार्थियों का स्वागत् किया। विद्यालय में 975 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं जिसमें 370 नये विद्यार्थी हैं।

स्थापना दिवस

विद्याभवन की 91वीं वर्षगांठ मुक्ताकाशी रंगमंच पर मनाई गयी। इस मौके पर प्राचार्य पुष्पराज राणावत ने स्वागत करते हुए कहा कि डॉ. मोहनसिंह मेहता द्वारा 21 जुलाई, 1931 को विद्याभवन स्कूल की स्थापना से आज तक यह संस्थान मजबूती के साथ खड़ी है और प्रगति कर रही है। आज 1975 बैच के विद्यार्थियों का आना विद्या भवन के प्रति उनकी प्रतिबद्धता एवं महत्व को दर्शाता है।

मुख्य अतिथि प्रतिष्ठित व्यवसायी एवं पूर्व छात्र विनोद सामरा एवं विशिष्ठ अतिथि कोमल कोठारी थे। मुख्य अतिथि विनोद सामरा ने कहा कि शिक्षा सबसे बड़ी पूंजी है जिसके द्वारा विद्यार्थी जीवन में सफलता को अर्जित कर धन व सम्मान को प्राप्त कर सकता है। जीवन में परोपकारी बनें, बड़ा सोचे, जल्दी सोचे और आगे सोचे क्योंकि विचारों पर किसी की पाबंदी नहीं होती है। अतः हमे सपने देखने चाहिए और उन्हें प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहना चाहिए ।

विशिष्ठ अतिथि कोमल कोठारी ने कहा कि आज के बालक कल की युवा पीढ़ी हैं। उनके पास अपार ऊर्जा है, अतः वे अपनी क्षमताओं को पहचान कर आंतरिक विश्लेषण करें और जीवन में आगे बढ़ते रहें। इस अवसर पर संस्थाओं की ओर से सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गई।

वन महोत्सव

स्कूल में वन महोत्सव का आयोजन हुआ। प्रकृति से सम्बन्धित चित्रकला प्रतियोगिता तथा विद्यालय परिसर में वृक्षारोपण किया गया। चित्रकला प्रतियोगिता में विभिन्न विषयों पर तीन ग्रुप बनाए गए जिसका परिणाम इस प्रकार रहा। "मेरा विद्यालय" विषय पर अर्जुन गरासिया कक्षा 7-बी प्रथम, हितेश मीणा कक्षा 7-बी द्वितीय, हिमांशु मेघवाल, कक्षा 8-ए व भूमि गरासिया, कक्षा 8-बी तृतीय स्थान पर रही।

कक्षा 9 एवं 10 के लिए "पर्यावरण संरक्षण - मेरा कर्तव्य" विषय में डिम्पल कुंवर व किरण देवड़ा प्रथम, कशिश शर्मा द्वितीय, खुशी देवड़ा तृतीय रही। कक्षा-11 एवं 12 के लिए प्रतियोगिता का विषय- "सांसे हो रही है कम - आओ पेड़ लगाएं हम" था जिसमें जान्हवी कुवाल प्रथम, प्रीति सुथार द्वितीय एवं नेहा डांगी व रचना सोनी तृतीय रही।

मुख्य अतिथि विद्याभवन सोसायटी के मुख्य वित्त सलाहकार अखिल त्रिवेदी ने कहा कि प्रत्येक छात्र अपने जीवन काल में एक वृक्ष अवश्य लगाएं तथा उसे बड़ा भी करें। संस्था प्रधान पुष्पराज राणावत ने बच्चों द्वारा बनाये गये चित्रों की सराहना की कहा कि पेड़ है तो हमारा जीवन है।

योग संदेश लेकर पहुंची विद्या भवन

योग को लोगों के बीच लोकप्रिय बनाने के लिए अपनी पहल लेकर साईकिल यात्रा पर निकली डॉ. अग्रिमा नायर स्कूल में विद्यार्थियों से रूबरू हुई। विद्यालय प्राचार्य पुष्पराज राणावत ने डॉ. अग्रिम नायर का स्वागत् किया साथ ही विद्यालय प्रतीक चिन्ह भी भेंट किया। इस यात्रा का उद्देश्य छात्र-छात्राओं को योग की और प्रेरित करना है। उन्होंने अपने संदेश में छात्र-छात्राओं को आसान प्राणायाम व ध्यान करने की सलाह दी। जीवन में तनाव को कम करने के लिए प्रातः जल्दी उठकर योग करना चाहिए साथ ही व्यवस्थित दिनचर्या को अपनाते हुए खान-पान का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए।

विविध गतिविधियां

विद्यालय में 1975 बैच की पूर्व छात्र डॉ. सुनीता गुप्ता ने मानव शारीरिकी विषय पर कक्षा 11 व 12 के जीव विज्ञान के विद्यार्थियों को प्रस्तुती दी। इनमें विभाग के अध्यापक पूर्व प्राचार्य पुष्पा शर्मा, विद्या भवन सोसायटी के सी.ई.ओ. अनुराग प्रियदर्शी एवं विद्यालय प्राचार्य भी उपस्थित थे। डॉ. सुनीता गुप्ता के इस प्रस्तुतीकरण से विद्यार्थियों को मेडिकल क्षेत्र में आगे बढने का प्रोत्साहन मिला।

शैक्षिक भ्रमण

विद्यालय की कक्षा-11 एवं कक्षा-12 के 60 विद्यार्थी आहाड़ संग्रहालय शैक्षणिक भ्रमण पर गये। बच्चों ने आहाड़ संग्रहालय का अवलोकन किया तथा ऐतिहासिक एवं पाषाण कालीन मूर्तियों, शस्त्र सिक्कों, मोहरों आदि को देखा एवं उनके सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की साथ ही आहाड़ की छतरियों को भी देखा एवं उनका रेखांकन भी किया, उनके इतिहास को समझा।

संस्कृत सप्ताह के अन्तर्गत

संस्कृत सप्ताह (श्रावण मासस्य पूर्णीमायां संस्कृत दिवसः एवं रक्षाबन्धन उत्सवः) मनाया गया जिसमें कक्षा 6 से 10 के छात्र-छात्राओं द्वारा श्लोक वाचन, शिव भजन, संस्कृत प्रश्नोत्तराणि, संस्कृत गीत एवं चार्ट निर्माण आदि कार्य किया गया ।

कृष्ण-मीरां भजन प्रतियोगिता सामाजिक विज्ञान विभाग के द्वारा किया गया जिसमें कक्षा 6 से 8 के विद्यार्थियों ने भाग लिया। दो चरणों में आयोजित इस प्रतियोगिता में प्रथम चरण में एकल-गान एवं द्वितीय चरण में युगल गान की प्रस्तुती दी गई। एकल-गान में प्रथम युवराज प्रजापत रहे। युगल-गान में प्रथम स्थान पर कुलदीप एवं कृष्णा रहे।

इंटेक हेरीटेज की और से प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता सेंट एंथोनी सीनियर सैकण्डरी स्कूल, गोवर्द्धन विलास, उदयपुर

में हुई। अध्यापिका डॉ. मोनिका भटनागर के निर्देशन में विद्यालय के 10 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। लोक कला मण्डल में इंटेक हेरीटेज की और से पेपरमेशी कार्यशाला में विद्यार्थियों ने पेपरमशी कार्य को सीखा।

शिक्षक दिवस

जैन सोशल ग्रुप विजय द्वारा शिक्षक दिवस पर विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकों को सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि जैन शोसल ग्रुप मेवाड़ क्षेत्र के चेयरमेन मोहन बोहरा ने कहा कि शिक्षक बच्चों का सही मार्गदर्शन कर हमारे देश के भावी नागरिक तैयार करते हैं, समाज में शिक्षक का स्थान सर्वोपरि है। ग्रुप के अध्यक्ष गोपाल बम्ब ने देश की प्रथम महिला शिक्षिका सावित्री बाई फुले को याद करते हुए बालिका शिक्षा में उनके योगदान को बताया। उन्होंने विद्या भवन में शिक्षकों द्वारा किये गये प्रयासों एवं नवाचारों को भी सराहा। विशिष्ठ अतिथि विद्या बंधु रेवती रमण श्रीमाली, प्राचार्य पुष्पराज राणावत ने भी विचार रखे।

शाला पंचायत चुनाव

सत्र 2022-23 में शाला पंचायत चुनाव प्रक्रिया में अध्यक्ष व उपाध्यक्ष पद पर कक्षा 6 से 12 के सभी विद्यार्थियों ने मतदान किया। अध्यक्ष पद पर हीना योगी कक्षा-11 वाणिज्य तथा उपाध्यक्ष पद पर सागर पुरोहित कक्षा-11 वाणिज्य संकाय से चुने गये। चंचल राणावत हेड गर्ल तथा गौरी शंकर हेडबॉय निर्वाचित हुए। मंत्रीमण्डल में अनुशासन मंत्री, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक मंत्री, खेल एवं स्वास्थ्य मंत्री, आमोद-प्रमोद मंत्री छात्र प्रभारी, वित्त मंत्री, श्रम मंत्री व मंत्री पंचायत सहायक व उप-सहायक का निर्वाचन किया गया।

शबद् शाला कार्यक्रम

शबद्शाला कबीर प्रोजेक्ट के अन्तर्गत कक्षा 6 से 9 तक के पाठ्यक्रम में सम्मिलित प्रमुख संतो के मौलिक उद्देश्यों को छात्रों तक संगीत व अन्य गतिविधियों के माध्यम से पहुंचाया है जिससे बालक उन्हें गहराई से रुचि लेकर आनन्द के साथ आत्मसात कर सके। कार्यक्रम की रूपरेखा के लिए विद्यालय की शिक्षिकाएं महेन्द्र कुंवर व उमा वर्मा तीन दिवसीय प्रशिक्षण के लिए पालनपुर (गुजरात) गये। समय-समय पर लोक कलाकार विद्यालय आए तथा भजनों से छात्रों तक निर्धारित संदेश को पहुंचाया। जैसलमेर से भल्लूराम, बीकानेर से मीर अली बासू व बंगाल से लाखोनदास बाऊल ने बच्चों के साथ संगत की। कार्यक्रम में राजस्थान के 12 से 13 निजी विद्यालय जुड़े हैं।

हिन्दी सप्ताह

हिन्दी सप्ताह के अंतर्गत अलग-अलग विषयों पर कविता, श्रुतिलेख व हिन्दी क्राफ्ट का कार्य करवाया गया जिसमें हिन्दी दोहे, हिन्दी लेखन, कविता, गीत, वर्णों की सहायता से शब्द बनाना आदि कार्य योजना बनाकर छात्रों से प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। चित्रकला प्रतियोगिता में कक्षा-1 व कक्षा-2 के बच्चों के लिए दीपावली विषय पर चित्रकला एवं कक्षा-3 से कक्षा-5 तक के विद्यार्थियों के लिए स्वयं की कल्पनाशीलता से चित्र बनाना आयोजित किया गया। अंग्रेजी सप्ताह में अंग्रेजी लेखन, स्पेलिंग कम्पीटीशन, कविता प्रतियोगिता हुई। सजावट प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने सजावटी चीजों मोती, झालर, कांच, फूल आदि से कक्षा-कक्षों की सजावट की। दीपावली त्योहार पर किये जाने वाले नृत्य, रामायण के दृश्य, कविताएं आदि का आयोजन कर दीपावली उत्सव मनाया। बाल दिवस पर विद्यार्थी पन्नाधाय पार्क व गोवर्द्धनसागर पाल गए। विचित्र वेशभूषा प्रतियोगिता में बच्चों ने एम्पायर, अखबार, चांद, पेड़, सूरज, टमाटर, भीण्डी वेशभूषा में आए अंत में फेशन परेड का आयोजन भी किया गया।

शनिवारीय सभा

विद्यालय के 1984 बैच के विद्यार्थी यशपाल सिंह ने विद्यार्थियों को स्वास्थ्य एवं सुरक्षा विषय पर जानकारी दी। उन्होंने कहा कि हमें जीवन में अनुशासन के साथ स्वास्थ्य एवं सुरक्षा का भी ध्यान रखना चाहिए। विद्यालय, दफ्तर, घर, वाहन आदि स्थानों पर प्राथमिक उपचार पेटी का होना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि हमे ईमानदारी, समानता, परस्पर संवाद, सामन्जस्य, व टीम भावना से कार्य करना चाहिए तभी हम एक अच्छा एवं सही नेतृत्व कर पाएंगे। पूर्व प्राचार्य पुष्पा शर्मा ने कहा कि व्यक्ति का जज़्बा बुलंद होना चाहिए, वह अपनी पसंद के क्षेत्र में जीवन में कठिनाईयों को पार करते हुए ऊंचाईयों को प्राप्त कर सकता है। उन्होंने ऋषि ऋण को समझाते हुए विद्याबंधु संघ से जुड़ने के लिए प्रेरित किया।

खेल-कूद प्रतियोगिताएं

शिक्षा विभागीय 66वीं जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं में विद्यालय की विभिन्न टीमों ने भाग लिया जिनमें 19वर्ष छात्र क्रिकेट प्रतियोगिता, 17 व 19 वर्ष छात्र वर्ग ने बेडमिंटन प्रतियोगिता, अण्डर 19 वर्ष में वॉलीबाल टीम राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भीण्डर से प्रथम मैच में विजयी रही। अण्डर 17 वॉलीबाल प्रतियोगिता, 17 व 19 वर्ष छात्र बेडमिंटन प्रतियोगिता में भाग लिया।

अण्डर-19 व अण्डर-17 छात्र-छात्र हॉकी प्रतियोगिता में विद्यालय की टीम ने शानदार प्रदर्शन किया जिसमें अण्डर 17 में छात्राओं ने फाईनल मैच में राउमावि रख्यावल को 3-1 से हरा कर प्रथम स्थान प्राप्त किया ।

अण्डर 14 छात्र-छात्रा हॉकी मैच में छात्र वर्ग में फाईनल मुकाबला राउमावि डाकनकोटड़ा के साथ खेला गया जिसमें विद्यालय की टीम उप विजेता रही। छात्र वर्ग ने राउमावि बम्बोरा को हराया। विद्यालय से 5 छात्र व 3 छात्राओं का चयन राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए हुआ।

राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में मदन मीणा, साहिल अहारी (अण्डर 19), कैलाश चारेल, पायल कुमारी डिण्डोर, अंजलि कलासुआ, फुलवंती रोत, सोनिका गरासिया, सोनिया दामा (अण्डर 17) व कोहीनूर सिंह गरासिया, दीपक रोत, करण बामनिया, ममता अहारी, सीमा गरासिया, कशिश डामोर, महिमा तावेड़, खुशबू गमेती (अण्डर 14) का चयन किया गया।

शेष पृष्ठ 6 पर...

विद्या भवन सीनियर सैकण्डरी स्कूल, रामगिरि

सत्र की शुरूआत

विद्या भवन उच्च माध्यमिक विद्यालय, रामगिरी में ग्रीन डे कार्यक्रम मनाया गया। प्राइमरी सेक्शन के सभी बच्चों को हरियाली का महत्त्व बताते हुए पर्यावरण संरक्षण की जानकारी दी गई। नन्हे-मुन्ने बच्चों की हथेली पर हरा रंग कर उनकी हथेली की छाप द्वारा पेड़ बनवाया गया। अधिकांश बच्चे हरे रंग के कपड़े पहन कर आए व कविता कहानियां व नाटक प्रस्तुत किए। साथ ही वृक्षों के महत्त्व को समझाते हुए बच्चों से श्रमदान कर वृक्षारोपण करवाया गया।

रक्षाबंधन उत्सव

विद्यालय के प्राइमरी सेक्शन में रक्षाबंधन उत्सव मनाया। बच्चों को राखी कब और क्यों मनाई जाती है, इसके बारे में जानकारी दी गई साथ ही राखी बनाओ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। नन्हे-मुन्ने बच्चों ने अपनी सृजनात्मकता का परिचय देते हुए मोती, सितारे, रूई, धागो आदि सामग्रियों का उपयोग करते हुए सुंदर-सुंदर राखियां बनाई।

बच्चों ने सीखी पानी की जांच

विद्या भवन पॉलिटेक्निक कॉलेज तथा डवलप अल्टरनेटिंग नई दिल्ली के संयुक्त प्रयास से पानी की गुणवत्ता तथा उस में विभिन्न तत्वों की उपस्थिति व उनकी मात्र का मापन करने के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में 10 सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी व उनके साथ आए शिक्षकों ने भाग लिया। सभी विद्यालय के विद्यार्थी अपने साथ उस विद्यालय के आसपास के क्षेत्र के पानी के नमूने लेकर आए। जिसमें भूमिगत व सतही दोनों प्रकार के जल के नमूने थे। विद्या भवन सीनियर सैकण्डरी स्कूल, रामगिरि से कक्षा-9 के दो छात्र अविनाश टावड़ व रघुवीर सिंह ने शिक्षक नरेंद्र कुमार के साथ भाग लिया। सभी बालकों ने वहीं पर नाइट्रोजन, फ्लोराइड, क्लोराइड, घुलनशील ऑक्सीजन, जीवाणु की उपस्थिति व मात्र की जांच की। तत्पश्चात डॉ. अनिल मेहता द्वारा पानी में विभिन्न तत्वों की उपस्थिति, उपस्थिति के कारण, अधिकता, कमी के प्रभाव के बारे में बालकों से बातचीत की। कार्यशाला में कृषि विश्वविद्यालय के जल केंद्र के निदेशक संजय गुप्ता ने भी विचार प्रस्तुत किए।

संस्कृत दिवस कार्यक्रम

विद्यालय में संस्कृत दिवस मनाया गया। संस्कृत दिवस प्रतिवर्ष श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। वीना औदिच्य द्वारा संस्कृत दिवस के बारे में बच्चों को अवगत कराया गया। कार्यक्रम में कक्षा-6 से कक्षा-10 के विद्यार्थियों ने भाग लिया। कक्षा-9 के विद्यार्थियों ने संस्कृत में गीत गाया। अन्य विद्यार्थियों ने अपनी पाठ्यपुस्तक से संबंधित श्लोकों की प्रस्तुति दी।

जन्माष्टमी उत्सव का आयोजन

विद्यालय में जन्माष्टमी उत्सव मनाया गया। बच्चों द्वारा नृत्य एवं भजन की सुंदर प्रस्तुति दी गई। साथ ही बच्चों के लिए वेशभूषा प्रतियोगिता रखी गई। बच्चे सुंदर वेशभूषा में राधा कृष्ण बनकर आए। बच्चों को जन्माष्टमी के बारे में जानकारी दी गई। कार्यक्रम में बच्चों ने उत्साह से भाग लिया, हर्षोल्लास से उत्सव मनाया गया।

गणेश उत्सव का आयोजन

गणेश उत्सव पर कक्षा-5 के विद्यार्थियों ने मिट्टी के सुंदर-सुंदर गणेशजी बनाए। विद्यार्थियों ने गणेश प्रतिमा के अंदर पेड़ पौधों के बीज भी डालें ताकि विसर्जन के दौरान बीज से पौधा बन जाए। इस प्रकार बीज गणेशजी बनाकर बच्चों को उत्सव के साथ पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाना, उसका उद्देश्य था। कुछ विद्यार्थियों ने कागज व पीपल के पत्तों से भी गणेशजी बनाए।

बस सवारी का रोमांच

कक्षा नर्सरी से कक्षा-1 तक के विद्यार्थियों बस बस द्वारा उदयपुर भ्रमण पर गए। सर्वप्रथम फतेहसागर, रानी रोड पाल से बच्चों को भ्रमण कराते हुए महाकाल मंदिर ले गए व फिर एक उद्यान में विद्यार्थियों ने भोजन किया। विद्यार्थियों ने चौराहे पर ट्रैफिक लाइट्स की भी जानकारी ली। इसके साथ ही पानी की उपयोगिता, पौधों से जुड़ी बातें साझा की गई।

प्रकृति साधना केंद्र पर भ्रमण

शैक्षणिक भ्रमण

बाल दिवस के उपलक्ष में विद्यालय के प्राइमरी सेक्शन के विद्यार्थी शैक्षणिक भ्रमण के लिए प्रकृति साधना केंद्र गए। विद्यार्थियों को केन्द्र निदेशक डॉ. आर. एल. श्रीमाल ने प्रकृति व पेड़ पौधों की महत्ता की जानकारी दी। चमन सिंह द्वारा सांपो की जानकारी दी और विद्यार्थियों को चिड़ियाओं के संरक्षण हेतु बर्ड हाउस बनाने के बारे में बताया।

बच्चों ने किया मतदान

भारत मजबूत लोकतंत्र से जाना जाता है और एक सफल और मजबूत लोकतंत्र के लिए आवश्यक है कि लोकतांत्रिक गुणों का विकास विद्यालय जीवन से ही प्रारंभ कर दिया जाए। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए विद्यालय में शाला पंचायत का गठन किया

गया। शाला पंचायत के चार पदाधिकारियों हेतु मतदान प्रक्रिया अपनाई गई। जिसने अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, खेल मंत्री, सांस्कृतिक मंत्री पदों हेतु कक्षा-6 से कक्षा-12 के विद्यार्थियों ने मतदान किया। लोकतांत्रिक गुणों का समावेश करते हुए सर्वप्रथम उम्मीदवार विद्यार्थियों ने आवेदन पत्र भरे चुनाव हेतु अपना प्रचार प्रसार किया। चुनाव में अध्यक्ष महिपाल सिंह, उपाध्यक्ष गर्वित श्रीमाली खेलमंत्री सौरव पटेल तथा सांस्कृतिक मंत्री सतीश लौहार निर्वाचित हुए। इनके साथ ही अन्य पदों हेतु विद्यार्थियों को मनोनीत भी किया गया।

दीपावली उत्सव का आनंद

दीपावली के उपलक्ष में दीया डेकोरेशन, दीपावली कार्ड बनाना व रंगोली प्रतियोगिता हुई। विद्यार्थियों ने रंगो, सितारों, मोती आदि सामग्री द्वारा दिए की सजावट की व दीपावली के कार्ड बनाएं। बच्चों ने अपनी क्षमता व रचनात्मकता प्रदर्शित करते हुए सुंदर व रंग-बिरंगी रंगोली बनाई।

गरबा करते विद्यार्थी

गरबे की धूम

गरबा महोत्सव का आयोजन किया गया। सभी बच्चे सुंदर वेशभूषा में तैयार होकर आए। शिक्षकों व बच्चों ने मिलकर गरबा महोत्सव का आनंद लिया।

शिक्षक दिवस की जानकारी

बच्चों से प्रार्थना सभा के दौरान शिक्षक दिवस के संदर्भ में जानकारी दी गई व बच्चों के ज्ञान वर्धन हेतु प्रश्नोत्तरी रखी गई।

'शबदशाला' से जुड़े विद्यार्थी

'शबदशाला' के रूप में एक नई गतिविधि विद्यालय में शुरू हुई। जिसके तहत विद्यार्थियों को भक्ति और सूफी संतों की वाणियों और विचारधारा से जुड़ने का अवसर मिला। अध्यापकों के लिए तीन दिवसीय बच्चों के लिए दो कार्यशालाएं आयोजित की गई। कार्यशाला में राजस्थान और अन्य राज्यों के लोक गायकों ने विद्यालय में आकर विद्यार्थियों को संतवाणियों से रूबरू करवाया, उन्हें संगीत सीखाया तथा कबीर व अन्य संतों के भजनों के गुढ़ अर्थ को समझने एवं उनमें रमने का

शेष पृष्ठ 14 पर...

...पृष्ठ 4 : विद्या भवन सी.सै.स्कूल, फतहपुरा का शेष

नियुक्तियां

विद्यालय में संगीत विभाग में विवेक अग्रवाल की नियुक्ति हुई। उन्हें तबला, गिटार, ढोलक, हारमोनियम, बांसुरी, माऊथ ओर्गन, कोंगो, शास्त्री गायन का 22 वर्षों का अनुभव है। इन्होंने संगीत के विभिन्न क्षेत्रों में उच्च स्तरीय प्रशिक्षण व संगीत शास्त्री गायन में एम.ए., तबले में सीनियर डिप्लोमा प्राप्त किया है।

शारीरिक शिक्षिका के पद पर प्रज्ञा माली की नियुक्ति हुई। वे वॉलीबाल में प्रशिक्षक व उत्कृष्ठ खिलाड़ी है, वॉलीबाल में इन्होंने 4 वेस्ट जोन प्राप्त किये हैं। योगा व पॉवर लिफ्टिंग में ऑल इण्डिया स्तर प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

शारीरिक शिक्षक के पद पर विवेक जांगीड़ भी हॉकी के प्रशिक्षक व उत्कृष्ठ खिलाड़ी हैं। हॉकी में आपने भी राष्ट्रीय स्तर पर चार वेस्ट जोन प्राप्त किये हैं।

सेवानिवृति

विद्यालय के अध्यापक गिरिराज शर्मा, गोपाल चौबीसा व फिरोज़ खान का सेवानिवृत्ति कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर सभी को प्राचार्य पुष्पराज राणावत द्वारा श्रीफल एवं शॉल ओढ़ा कर सम्मानित किया गया।

जूनियर विभाग

जूनियर विभाग में कक्षा- से कक्षा-5 के विद्यार्थियों के लिए लिखित प्रतियोगिता में मानसिक गणित के प्रश्नोत्तर करवाये गये। गणित अध्यापक नरेश वैष्णव के नेतृत्व में बच्चों की भागीदारी सराहनीय रही एवं कक्षावार प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त विद्यार्थियों को जूनियर, व सीनियर समूहों में बांटा गया। राखी बनाओ प्रतियोगिता में बच्चों ने अपनी सृजनात्मक कौशलता के अनुसार राखी बनाई। आजादी का अमृत महोत्सव में बच्चों ने राष्ट्रीय गान, राष्ट्रीय गीत व देशभक्ति गीतों की प्रस्तुतियां अभिनय के माध्यम से प्रस्तुत की। जन्माष्टमी पर्व पर विद्यार्थियों ने श्रीकृष्ण भजन प्रस्तुत किये व झांकियां बनाई। शिक्षक दिवस पर विद्यार्थियों को सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्ण के जीवन परिचय से रूबरू कराया और पंचायत-डे का भी गठन किया गया जिसमें अध्यक्ष दिशा कुंवर कक्षा-5 व उपाध्यक्ष नारू गमेती कक्षा-4 निर्वाचित किये गये।

जूनियर मंत्रीमण्डल गठन में खेल मंत्री, सांस्कृतिक मंत्री, साहित्यक मंत्री, स्वास्थ्य मंत्री, आमोद-प्रमोद मंत्री, पुस्तकालय मंत्री का भी गठन किया तथा विद्यार्थियों को उनके द्वारा करणीय कार्यों को भी बताया गया। मुशीरे खास नरेश वैष्णव ने चुनाव प्रक्रिया समझाई। पंचायत-डे पर पकोड़ा पार्टी में गीत व कविताएं भी प्रस्तुत की गई। मांटेसरी दिवस के उपलक्ष में विद्यार्थी गुलाब बाग बर्ड पार्क गए तथा नवलखा महल देखा।

नर्सरी विभाग

नवरात्रि उत्सव के अंतर्गत बच्चों ने पारंपरिक वेशभूषा में गरबा उत्सव का आनन्द लिया। विद्यार्थियों ने मां दुर्गा के नव रूपों के साथ नवरात्रि पर्व की महत्ता को समझाया। दीपावली पर्व पर विद्यार्थियों ने दीपावली कार्ड व फूलों की रंगोली बनाई। दीपावली पर्व की महत्ता व असत्य पर सत्य की विजय का महत्त्व समझाते हुए अच्छे कार्य करने के लिए प्रेरित किया गया। बाल दिवस के उपलक्ष्य में विद्यार्थी राजीव गांधी पार्क गए जहां बच्चों ने झूले व फिसलपट्टी का आनन्द लिया और अनुशासन के महत्त्व को समझा।

रिपोर्टर : नारायण लाल आमेटा

विद्या भवन पब्लिक स्कूल

राखी-चित्रकला प्रतियोगिता

सृजनात्मकता शिक्षण को सरल व रोचक बनाती है। छात्रों में रचनात्मकता कौशल तथा परस्पर सद्भावना व प्रेम को बढ़ावा देने के लिए विद्यालय में कक्षा-3 से 8 तक के छात्रों को रक्षा-बन्धन के अवसर पर राखी बनाना और चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें छात्रों ने अनुपयोगी सामग्री का प्रयोग कर राखियां बनाई तथा चित्रकला प्रतियोगिता में बढ़-चढ़ कर कर भाग लिया।

मस्ती, खेल, आउटिंग

बच्चों में निरसता की भावना को दूर करने के लिए तथा मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए छात्रों को भ्रमण पर ले जाना आवश्यक है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए अगस्त में कक्षा-1 से कक्षा-3 को फतहसागर स्थित सन फिशएक्वेरियम ले जाया गया। जहां बच्चों ने विभिन्न प्रकार की मछलियों की प्रजातियों के बारे में जानकारी ली। इससे छात्रों में परस्पर मित्रता तथा आनन्द का वातावरण बना।

आहाड़ सभ्यता

विद्यार्थियों को हमारी प्राचीन सभ्यता से अवगत कराने हेतु तथा विकास के क्रम से अवगत कराने के उद्देश्य से कक्षा-6 के विद्यार्थी आहाड़ संग्रहालय गए। विद्यार्थियों ने वहां सभ्यता से सम्बन्धित शिलालेख पढ़े तथा पुराने मिट्टी के बर्तन, आभूषण, औजार आदि देखे।

संस्कृति और विरासत को जाना

प्रत्येक बच्चे को किताबी ज्ञान के अलावा अपने देश के बारे में सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्यों से अवगत होना आवश्यक है। जिससे वे बाल्यकाल से ही अपने देश से भावनात्मक रूप से जुड़ा रहे तथा अपने पुरखों के संघर्ष से जो विरासत हमें मिली है उसका सम्मान कर उसके मूल्य को समझे इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए विद्यालय के कक्षा-3 व कक्षा-4 के विद्यार्थी "प्रताप गौरव केन्द्र" गए। वहां विद्यार्थियों को महाराणा प्रताप, मीराबाई, भामाशाह हम्मीद के जीवन से आधारित विभिन्न प्रकार की कहानियां बताई गई। हमारे बच्चों के लिए सौभाग्य की बात यह रही की उसी दिन "भामाशाह जयंती" के अवसर पर विद्यार्थियों ने भामाशाह की मूर्ति पर माल्यार्पण किया।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आज़ादी के 75 वर्ष पूर्ण होने पर सम्पूर्ण राष्ट्र में 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' मनाया गया। इसी कड़ी में विद्यालय में छात्रों को आज़ादी की महत्ता को बताने के लिए कक्षा-6 से कक्षा-10 तक के विद्यार्थियों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता हुई। प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

सांस्कृतिक संध्या में दी प्रस्तुतियां

सांस्कृतिक संध्या वृन्द-वादन-2022 का आयोजन विद्या भवन पब्लिक स्कूल के मुक्ताकाशी मंच पर किया गया। प्राचार्या नीरजा जैन ने बताया कि कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र उदयपुर की निदेशक किरण सोनी गुप्ता, विशिष्ठ अतिथि अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी ललित दक, विद्या भवन सोसायटी के अध्यक्ष अजय सिंह मेहता, मुख्य संचालक अनुराग प्रियदर्शी शामिल हुए। विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों में छात्रों ने मन मोहक प्रस्तुतियां दीं। इसमें गीत, संगीत, नाटक और नृत्य शामिल हैं।

जिम्मेदारी का पद

विद्यालय की छात्र परिषद का शपथ ग्रहण समारोह विद्यालय के सभागार में आयोजित किया गया जिस में मुख्य अतिथि विद्या भवन सोसायटी के मुख्य संचालक अनुराग प्रियदर्शी बतौर अतिथि शामिल हुए। समारोह में नवनिर्वाचित सदस्यों को उनके दायित्व सौंपे गए। मुख्य अतिथि ने छात्रें को संबोधित करते हुए कहा कि यह पद शक्ति का नही बल्कि जिम्मेदारी का पद है।

धूम-धाम से मनाया गया क्रिसमस डे

क्रिसमस डे के अवसर पर सांता ने बच्चों को उपहार स्वरूप टॉफियां देकर खुशियाँ बांटी। प्रतिवर्ष 25 दिसम्बर को प्रभु यीशु/ईसा मसीह का जन्म दिन पूरी दुनिया में उत्साह पूर्वक मनाया जाता है। क्रिसमस का संदेश आपस में खुशियां बांटना, खुश रहना, प्रेम व भाई चारा फैलाना इन्ही उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विद्यालय में क्रिसमस का पर्व मनाया गया।

जाने संतों की वाणी को

बच्चों में आत्म विश्वास बढ़ाने तथा बच्चों को गायन के जरिए भजन के करीब लाने के साथ-साथ विचार विमर्श को भी उजागर करना है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए 'शब्द शाला' टीम की तरफ से समय-समय पर भजन सत्र का आयोजन किया गया। जिसमें लोक कलाकार भल्लूरामजी, मीरअली, वासु, लोखेन दासजी के साथ विद्यार्थियों ने कबीरदासजी द्वारा रचित भजनों को गाया तथा उनके विचारों को समझा।

नाचते गाते साल को किया अलविदा

शीतकालीन छुट्टियों से पहले विद्या भवन पब्लिक स्कूल में क्रिसमस के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। विद्यालय परिसर की सजावट की गई तथा बच्चों ने सेंटाक्लोज़ के साथ नृत्य कर क्लास पार्टी का आनन्द उठाया। इसी के साथ विद्यार्थियों के लिए विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया।

बच्चों की कला प्रदर्शनी के संग

विज्ञान/कला प्रदर्शनीः- विज्ञान एवं कला प्रदर्शनी का आयोजन विद्या भवन पब्लिक स्कूल के सभागार/पुस्तकालय में हुआ। प्राचार्या नीरजा जैन ने बताया कि प्रदर्शनी में मुख्य अतिथि भौतिकी अनुसंधान प्रयोगशाला, उदयपुर सौर वैधशाला के सहआचार्य डॉ. भुवन जोशी, मिनिएचर आर्टिस्ट राजाराम शर्मा, विद्या भवन सोसायटी के अध्यक्ष अजय एस. मेहता, मुख्य संचालक अनुराग प्रियदर्शी बतौर अतिथि शामिल हुए। विज्ञान प्रदर्शनी में कक्षा-2 से कक्षा-12 तक के विद्यार्थियों ने अपने मॉडल प्रदर्शित करते

शेष पृष्ठ 14 पर...

विद्या भवन पॉलिटेक्निक कॉलेज

प्रवेश प्रक्रिया प्रारम्भ

पॉलिटेक्निक डिप्लोमा में प्रवेश प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। कार्यकताओं द्वारा विद्यार्थियों व उनके अभिभावकों को केरियर काउंसलिंग कर पॉलिटेक्निक डिप्लोमा, पॉलिमर साइंस और रबरटेक्नोलोजी व मेकेट्रोनिक्स कोर्स की जानकारी दी।

ऑरियंटेशन कार्यक्रम

प्रथम वर्ष के नव प्रवेशित विद्यार्थियों का आरियंटेशन कार्यक्रम में विद्यार्थियों के साथ अभिभावक भी आये। प्राचार्य अनिल मेहता ने स्वागत किया। विभागाध्यक्ष सोनु हीरावत ने महाविद्यालय के नियमों से अवगत कराया तथा डॉ. दीपक गुप्ता ने मोटिवेशनल स्पीच दी और कहा कि विद्यार्थी को अपना करियर कैसे बनाना हैं, और जीवन में सफलता कैसे हासिल करनी हैं और इसके लिये क्या प्रयास करने चाहिये, अपनी दैनिकचर्या में परिवर्तन कर अपने करियर के प्रति जागरुक होने के लिए प्रेरित किया।

इंजीनियर्स डे

सर विश्वैश्वरैया की याद में इंजीनियर्स-डे मनाया गया। नवाचारी उद्यमी एवं विद्या भवन के उपाध्यक्ष दिलीप गलुण्डिया ने कहा कि इंजीनियर समुदाय ऐसे समस्त प्रोजेक्ट, उपकरणों, तकनीकी जिनमें पेड़, पहाड़, पानी, पर्यावरण को स्थायी नुकसान हो, उनका मार्बल, ग्रेनाइट सहित अन्य पत्थरों के चूरे से कागज का निर्माण किया जा सकता है। उदयपुर ने इस दिशा में चिंतन प्रारम्भ कर दिया है। पत्थर से पेपर निर्माण की तकनीकी व प्रक्रिया पर विश्व में सफल प्रयोग हुए है जो महंगे है। लेकिन, उदयपुर स्थानीय रूप से उपलब्ध तकनीकी ज्ञान व हुनर के माध्यम से उपयुक्त व सराहनीय लागत मे इस कार्य को करने की दिशा में कदम बढ़ा रहा है। यह स्मार्ट इंजिनियरिंग का एक अनूठा उदाहरण साबित हो सकता है।

प्रसिद्ध आर्किटेक्ट सुनील लड्ढा ने कहा कि स्मार्ट इंजीनियरिंग के लिये जरूरी है कि इंजिनियरिंग में एम्पेथी हो। जब विकास व निर्माण की योजनाओं में पेड़ों, पक्षियों, पानी सहित प्रकृति के प्रति स्नेह व करुणा का भाव रखेगें तभी उदयपुर स्मार्ट बनेगा।

प्रदूषण नियंत्रण मण्डल के पूर्व अधिकारी नवीन व्यास ने कहा कि नवीन तकनीकों व ऑन लाइन मॉनिटरिंग सिस्टम से प्रदूषण पर प्रभावी नियंत्रण होगा।

हरीश माथुर ने कहा कि झीलों को संरक्षित रखना व पानी का मितव्ययी उपयोग जरूरी हैं।

प्राचार्य अनिल मेहता ने कहा कि उदयपुर सहित कोई भी शहर केवल आधुनिक सड़कों लाईटों व भवनों से स्मार्ट नहीं हो सकता जब तक स्मार्ट का संदर्भ नही समझा जायेगा तब तक उदयपुर स्मार्ट नहीं बनेगा, विकल्प ढूंढे। पर्यावरण को बचाने की अहम जिम्मेदारी अभियंता समुदाय की है।

इस अवसर पर विद्यार्थियों ने नॉहॉन्किंग पर पोस्टर बनाकर प्रदर्शनी लगाई।

पेरेन्ट्स टीचर मीटिंग

पेरेन्ट टीचर्स संवाद में अकादमिक विकास पर प्राध्यापको की अभिभावकों से खुलकर चर्चा की गई। अभिभवकों ने प्रसन्नता जताई कि पॉलिटेक्निक द्वारा प्रभावी रुप से शिक्षण कार्य करवाया जा रहा है।

ए.आई.सी.टी का अप्रुवल

बी.टी.ई.आर. का ऐफिलेशन का काम पूर्ण किया गया और 7 अगस्त को संबंधता प्राप्त हुई। यह एक अति आवश्यक प्रोसेस है इसके बिना प्रवेश प्रक्रिया शुरु नहीं हो सकती।

खेलकूद प्रतियोगिता

स्वस्थ शरीर में स्वस्थ्य मस्तिष्क का विकास होता है इसी को ध्यान में रखते हुए विद्या भवन पॉलीटेक्निक में खेल सप्ताह मनाया गया। महाविद्यालय के सभी छात्र-छात्राओं ने विभिन्न प्रतियोगिताओं वॉलीबाल, बेडमिंटन, चम्मच रेस, क्रिकेट, डिस्कस बाल थ्रो, केरम, कबड्डी आदि में भाग लिया।

एक्सपर्ट लेक्चर

नीतिन सनाढ्य व रमेश कुम्हार ने इलेक्ट्रिकल, मो. सिकन्दर व अमित कुशवाह ने इलेक्ट्रोनिक के विद्यार्थियों को 45 दिनों की प्रेक्टिकल ट्रेनिंग कराई जो टेक्निकल शिक्षा बोर्ड द्वारा पाठ्यक्रम में सम्मिलित है। डा. अशोक बैरवा आई स्पेशलिस्ट आरएनटी मेडिकल कॉलेज ने आई केअर कैसे करनी है व आई डोनेशन की जानकारी दी। दीपक पुरोहित, समाज सेवी ने विश्व बंधुत्व की भावना के बारे में बताया। नवीन पालीवाल रिसर्च वैज्ञानिक सोलर टेक्नोलोजी के द्वारा सोलर टेक्नोलोजी के बारे में बताते हुए घर व प्रोधोंगिकी के क्षेत्र में इसका उपयोग बताया गया। धर्मेन मेनारिया आई.आई.एम, उदयपुर ने सॉफ्टवेयर फिल्ड में कैरियर के बारे में बताया। डा. संजय महेश्वरी आयुर्वेदाचार्या ने स्वास्थ्य को कैसे स्वस्थ्य व निरोगी रखे बताया। डॉ. अर्पिता जैन असिसटेंन्ट मैनेजर आरगेट, उदयपुर ने पर्सनेलिटि डेवलपमेन्ट के बारे में बताया। यश नागदा डेटा साइंटिस्ट ने विद्यार्थियों को सॉफ्टवेयर डेवलपमेन्ट, डेटा एनालिस्ट, डेटा साइंटिस्ट के करियर के बारे में बताया। गिरीश आमेटा सॉफ्टवेयर डेवलपर ने विद्यार्थियों को सॉफ्टवेयर डेवलपमेन्ट में आने वाली चुनौतियों तथा रियमटाइम प्रॉब्लम तथा भूपेन्द्र राजगुरु ऑटोकेड स्पेशलिस्ट ने विद्यार्थियों को ऑटोकेड के कमांड्स व उपयोग बताए।

शेष पृष्ठ 14 पर...

विद्या भवन रूरल इंस्टीट्यूट

नशा मुक्ति की प्रतिज्ञा

विद्या भवन रुरल इंस्टीट्यूट राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा राष्ट्रीय महात्मा गांधी जयन्ती एवं विश्व अहिंसा दिवस के अवसर पर महाविद्यालय में सर्वधर्म प्रार्थना सभा का आयोजन हुआ। तत्पश्चात नशा मुक्ति अभियान से लेकर सभी को प्रतिज्ञा दिलाई व महात्मा गांधी के जीवन एवं चरित्र के प्रासंगिक तथ्यों के बारे में विद्यार्थियों को अवगत कराया। स्वच्छ भारत अभियान एवं सरदार वल्लभ भाई पटेल जयंती के उपलक्ष्य में एक दिवसीय शिविर के अन्तर्गत स्वयंसेवकों ने एनएसएस गान, योगाभ्यास, श्रमदान एवं निबन्ध प्रतियोगिता में भाग लिया।

क्वांटम यांत्रिकी पर व्याख्यान

महाविद्यालय के भौतिक विज्ञान विभाग द्वार "क्वांटम यांत्रिकी की मूल बाते" पर एक विस्तार व्याख्यान किया गया। विद्यार्थियों को फोटो इलेक्ट्रीक इफेक्ट, कॉम्पटन इफेक्ट, डी ब्रोगली परिकल्पना, हाइजेनबर्ग के अनिश्चितता सिद्धान्त, ऑपरेटरो ओर श्रोडिंगर के समीकरण की अवधारनाओं को समझाया गया।

कैम्पस प्लेसमेंट

रसायन विज्ञान विभाग एवं सीवी टेक लेब की ओर से कैम्पस प्लेसमेंट साक्षात्कार का आयोजन किया गया। इस साक्षात्कार में पांच छात्रों को शॉर्ट लिस्ट किया गया।

नियमित कक्षाएं प्रारंभ

संस्थान में नये प्रवेशित विद्यार्थियों की कक्षाएं प्रारंभ हुई। नियमित पाठ्यक्रम के अतिरिक्त निम्न विषय की कक्षाएं भी प्रारंभ हुई जिनमें सर्टिफिकेट कोर्स इन योगा, स्पोकन इंग्लिश एंड पर्सनाल्टी डवलपमेंट, वेब डवलपमेंट, रूरल एक्सटेंशन एवं मैनेजमेंट एवं रिटेल मेनेजमेंट शामिल हैं।

विभागों की गतिविधियां

महाविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग द्वारा वैज्ञानिक रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। प्रतियोगिता में 10 टीम और 25 छात्रों ने भाग लिया। छात्रों को वैज्ञानिक स्वभाव के साथ कलात्मक उत्साह का परिचय भी दिया। महाविद्यालय के वनस्पति विभाग द्वारा नेचर क्लब का गठन किया गया जिसमें छात्रों को नेचर क्लब की गतिविधि में अपनी सक्रीय भागीदारी देने के लिए व पर्यावरण को बचाने के लिए प्रेरित किया। महाविद्यालय के वाणिज्य एवं प्रबंध विभाग द्वारा बीबीए छात्रों के लिए गाला बाग (बोनजोर पैलेस) में टेलेंट मीट का आयोजन किया गया। इसमें छात्रों को सम्बन्ध बनाने, विभिन्न दृष्टिकोणों को समझने और अन्य संस्कृतियों को जोड़ने की जानकारी दी गई। रसायन विज्ञान विभाग द्वारा महाविद्यालय और ओजोन टेस्ट हाउस के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुए। जिसमें छात्रों को 10 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान जल विश्लेषण, उपकरण संचालन और सर्वोत्तम प्रयोगशाला प्रथाओं में व्यावहारिक शिक्षा और प्रशिक्षण प्राप्त होगा। इसके पश्चात विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये जाएंगे। भूगोल विभाग द्वारा कला संकाय के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों को मानचित्र निर्माण गतिविधि से अवगत कराया गया। वाणिज्य एवं प्रबन्ध संकाय द्वारा दिवाली उत्सव के उपलक्ष्य में दिया डेकोरेशन एवं पारम्परिक वेशभूषा कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भागीदारी दी एवं उत्कृष्ठ विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया।

रोज़गार व बैंकिंग पर कार्यशाला

वाणिज्य एवं प्रबंध संकाय के बैंकिंग व व्यावसायिक अर्थशास्त्र विभाग द्वारा एम प्रोफेशनल एज्यूकेशन लर्निंग के तत्वावधान में विद्यालयों के लिए बैंकिंग क्षेत्र में रोज़गार तथा बैंकिंग प्रैक्टिसेज की जानकारी के लिए दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला में मुख्य वक्ता एमपीईएल के निदेशक एवं संस्थापक तरुण टांक और आदित्य बिरला ग्रुप से रवि शर्मा थे। तरुण टांक द्वारा बताया कि बैंकिंग क्षेत्र में उपलब्ध अपार संभावनाओं तथा विभिन्न पदों पर किस प्रकार से विद्यार्थी आवेदन कर सकते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि एमपीईएल द्व ारा कराए जा रहे बैंकिंग के विभिन्न ट्रेनिंग प्रोग्राम किस प्रकार से विद्यालयों को अपने रोज़गार प्राप्त करने एवं बैंकिंग क्षेत्र में अपना करियर बनाने में सहायक हो सकते हैं। रवि शर्मा ने बैंकिंग के यूपीआई स्विफ्ट आदि विषयों पर जानकारी दी।

वनस्पति विज्ञान विभाग के सहयोग से नेचर क्लब द्वारा "संस्थान में प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन" पर व्याख्यान हुआ। व्याख्यान में बताया गया कि कि सूक्ष्म प्लास्टिक वनस्पतियों और जीवों के जीवन को कैसे प्रभावित करता है। इससे न केवल स्थलीय बल्कि जलीय जीव भी प्रभावित हो रहे हैं और समस्या अब धीरे-धीरे विकराल होती जा रही है। इसलिए प्लास्टिक कचरे के उचित प्रबंधन के बारे में सोचने का यह उचित समय है। सत्र में यह निर्णय लिया गया कि नाटक और अभियान के माध्यम से प्लास्टिक को कम करने, पुनः उपयोग और पुनर्चक्रण के लिए जागरूकता अभियान को भी बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

14 नवम्बर विद्या भवन रूरल इंस्टीट्यूट की आई.क्यू.ए.सी. द्वारा स्लोगन/पोस्टर प्रतियोगिता रखी गयी, विषय प्लास्टिक मुक्त भारत रखा गया, इस प्रतियोगिता में 12 विद्यालयों ने हिस्सा लिया प्रतियोगिता के पश्चात आस-पास के क्षेत्र में जागरूकता फैलाने हेतु रैली का आयोजन किया गया जिसमें महाविद्यालय के विद्यालयों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया, रैली के पश्चात पोस्टर प्रतियोगता के विजेता विद्यालयों को प्रमाण-पत्र एवं पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। प्लास्टिक मुक्ति हेतु जागरूकता लाने के लिए महाविद्यालय परिसर में तख्तियां लगाई गई जिससे प्लास्टिक हटाने का संदेश फैलाया जा सके।

भरत व धारिणी को गोल्ड मेडल

विश्वविद्यालय द्वारा स्नातक एवं स्नातकोत्तर परीक्षा 2021 के परीक्षा परीणामों में विद्या भवन रुरल इंस्टीट्यूट के विद्यार्थी ने रसायन विज्ञान (एम.एस.सी.) में भरत चौधरी एवं बी.बी. ए. की धारिणी जैन ने गोल्ड मेडल की सूची में स्थान बनाया है।

हॉकी में तीसरा स्थान

अंतर महाविद्यालय हॉकी प्रतियोगिता में विद्या भवन रूरल इंस्टीट्यूट टीम ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार, विद्या भवन रूरल इंस्टीट्यूट एवं कला महाविद्यालय के बीच बैडमिंटन सेमीफाइनल का मैच खेला गया। मैच में विद्या भवन रूरल इंस्टीट्यूट प्रथम मैच में चित्तौड़गढ़ को हराकर क्वार्टर फाइनल में पहुंची और क्वार्टर फाइनल में साइंस कॉलेज को हराकर सेमीफाइनल में पहुंची।

संस्कृत श्लोक लेखन

संस्कृत विभाग द्वारा दो दिवसीय सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता व संस्कृत श्लोक लेखन का आयोजन किया गया। प्रथम दिन सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में महाविद्यालय के 52 प्रतिभागियों ने भाग लिया, व दूसरे दिन श्लोक लेखन में 30 व श्लोक उच्चारण में 11 प्रतिभागियों ने भाग लिया। रसायन विज्ञान विभाग में पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता हुई। विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। अंग्रेजी विभाग द्वारा कविता पाठ में 8 छात्रों ने भाग लिया। कंप्यूटर विज्ञान विभाग में कंप्यूटर क्विज प्रतियोगिता में "टीम-2" (सानिध्य, अनंत, नेत्रपाल और विशाल) ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। रसायन विज्ञान विभाग द्वारा विद्यालयों एवं संकाय सदस्यों की उपस्थिति में मॉक ड्रिल करवाई गई। विद्यार्थियों को अग्निशामक यंत्रों की जानकारी के साथ उनके उपयोग की जानकारी दी गई। अनूप श्रीमाली द्वारा बुनियादी वित्तीय अवधारणा पर वार्ता हुई वार्ता में वित्तीय से संबंधित वित्तीय विनियोग, वित्तीय योजना पर प्रकाश डाला। राजनीति विज्ञान विभाग एवं लोक प्रशासन विभाग द्वारा संविधान दिवस के उपलक्ष में निबंध प्रतियोगिता हुई। 'मेरा संविधान मेरा अभिमान' विषय पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता में 22 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

महिला स्वास्थ्य पर व्याख्यान

महाविद्यालय के आईक्यूएसी सेल की और से कॉलेज की छात्राओं के लिए मासिक चक्र स्वास्थ्य एवं स्वच्छता विषय पर व्याख्यान हुआ। डॉ. कंचन पानेरी ने 56 छात्राओं को इस विषय पर जानकारी प्रदान की।

वाणिज्य एवं प्रबन्ध संकाय द्वारा बीबीए प्रथम सेमेस्टर के छात्रों के लिए व्यवसाय सांख्यिकी व वित्तीय लेखांकन के विभिन्न विषयों पर प्रस्तुती गतिविधि पर प्रतियोगिता में 7 समूहों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में उन सभी विषयों को शामिल किया गया है जो विद्यार्थियों को उनकी आंतरिक परीक्षा की तैयारी में मदद कर सके।

महाविद्यालय मे क्लस्टर कैंप का आयोजन किया गया। कैंप में 17 वर्ष या उससे अधिक आयु वाले विद्यार्थियों का नाम मतदाता सूची मे जोड़ा गया।

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के तत्वावधान में महाविद्यालय में तीरंदाजी प्रतियोगिता हुई जिसमें 10 टीमों ने भाग लिया। महिला वर्ग में 7 टीमों ने भाग लिया। दो दिवसीय कार्यक्रम का प्रतिवेदन डॉ. नीरु श्रीमाली ने प्रस्तुत किया। महिला वर्ग रिकर्व में इण्डियन 50 मी. व 30 मी. में महाविद्यालय की सोनाली वैष्णव प्रथम स्थान पर रही। सोनाली वैष्णव को महिला वर्ग का बेस्ट प्लेयर चुना गया।

हर्षित का अंतर्राष्ट्रीय टीम में चयन

विद्या भवन रुरल इंस्टीट्यूट के छात्र हर्षित खाण्डल का चयन अंतर्राष्ट्रीय खेल कंजाक कुरेशी प्रतियोगिता में हुआ। खेल का आयोजन कजाकिस्तान में हुआ। हर्षित भारतीय टीम में शामिल थे। प्रतियोगिता में 34 देशों ने भाग लिया। भारतीय टीम ने लीग मैचों में जीत हासिल कर सेमीफाईनल तक जगह बनाई।

डॉ. अनिता प्रतिनिधिमण्डल में शामिल

महाविद्यालय के वनस्पति विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अनिता जैन को नगर निगम, आरहस (डेनमार्क) द्वारा एकीकृत जल संसाधन प्रबंधन के सदस्य के रूप में उदयपुर प्रतिनिधिमंडल के सदस्य के रूप में आमंत्रित किया गया। परियोजना का लक्ष्य कायाकल्प करने वाले गुमानिया वाला नाला (उदयपुर) के लिए नीले-हरे समाधानों का पता लगाना था। दोनों टीमों ने संभावित नीले-हरे समाधानों पर विस्तार से चर्चा की। एक जैव विविधता विशेषज्ञ के रूप में, उन्होंने जल निकाय और आसपास के क्षेत्रें के भीतर स्थायी जैव विविधता विकसित करने के लिए देशी फूलों की प्रजातियों को लगाने का सुझाव दिया क्योंकि यह जल निकाय के कायाकल्प के लिए महत्त्वपूर्ण है।

छात्र संघ कार्यालय का उद्घाटन

विद्या भवन रुरल इंस्टीट्यूट, छात्र संघ कार्यालय का उद्घाटन किया हुआ। मुख्य अतिथी नरेश प्रजापत पूर्व छात्र संघ अध्यक्ष एवं पूर्व सरपंच बेदला ने रिबन काटकर उद्घाटन किया। इस मौके पर नरेश प्रजापत ने कहा कि छात्र संघ पर संस्थापित होकर महाविद्यालय की सेवा तथा समाज व राष्ट्र हित के साथ कार्य करें। वर्तमान में महाविद्यालय के छात्र संघ अध्यक्ष कर्ण मेनारिया तथा अन्य कार्यकारिणियों ने अपना परिचय दिया तथा महाविद्यालय के बारे में अवगत कराया।

रसायन विज्ञान विभाग द्वारा एम.एससी. के विद्यार्थियों के लिये ओरिएंटेशन प्रोगाम रखा गया। विद्यार्थियों को एमएससी के मूल्य और क्षमता से अवगत कराया गया। शैक्षणिक कैलेंडर, समय सारिणी के साथ विभाग की विभिन्न पाठ्येतर गतिविधियों, जैसे फ्रेशर और फेयरवेल पार्टी, प्रयोगशाला और औद्योगिक पर्यटन, सेमिनार आदि को भी छात्रों को साझा किया गया। उन्हें एनएसएस और रोवर यूनिट, छात्र चुनाव प्रक्रिया के साथ कॉलेज के खेल और सांस्कृतिक कार्यक्रमों को बताया। डॉ. अंजू जैन ने ओजोन हाउस के साथ हुए एमओयू और उसके प्रशिक्षण के लाभों से अवगत करवाया। छात्रों के लिए प्रेरक "प्रसिद्ध विफलताओं" एवं प्रयोगशाला सुरक्षा पर एक वीडियो दिखाया गया।

रिपोर्टर : पिंकी सोनी

विद्या भवन गोविन्दराम सेकसरिया शिक्षक महाविद्यालय

प्राचार्य का स्वागत करती स्टाफ सचिव

नई प्राचार्य का स्वागत

डॉ. फरजाना इरफान महाविद्यालय की प्राचार्य बनीं। डॉ फरजाना कार्बनिक केमेस्ट्री में एम.एससी. तथा अकार्बनिक केमेस्ट्री में एम.फिल तथा शिक्षा में आपदा प्रबंधन पर पीएच.डी. हैं। उन्हें शिक्षक शिक्षा में रसायन विज्ञान शिक्षण शास्त्र तथा बी.एड. एवं एम. एड. स्तर पर विभिन्न अनिवार्य विषय पढ़ाने का 17 वर्षों का लंबा अनुभव है। वे स्वबोध पुस्तक, तुलनात्मक शिक्षा, डी.एल.एड. की विज्ञान शिक्षण पुस्तक, समस्या समाधान और अध्यापक प्रभावकारिता मनोवैज्ञानिक परीक्षण की सह-लेखिका रही हैं।

स्वतंत्रता दिवस मनाया

विद्या भवन गोविंदराम सेक्सरिया शिक्षक महाविद्यालय में स्वतंत्रता दिवस की 70वीं वर्षगांठ हर्षोल्लास पूर्वक मनाई गई। यह कार्यक्रम विद्या भवन सोसायटी के अध्यक्ष अजय एस. मेहता की अध्यक्षता में मनाया गया। मुख्य अतिथि शिक्षाविद् डॉ. दया दवे थीं। ध्वजारोहण अध्यक्ष एवं मुख्य अतिथि द्वारा किया गया स्वागत उद्‌बोधन करते हुए महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. अरविंद आशिया ने स्वास्थ्य के प्रति युवाओं को सजग रहने का आह्वान किया। अध्यक्षीय उद्‌बोधन में अजय एस. मेहता ने कहा कि हमें गांधीवादी सिद्धांतों एवं मूल्यों को अपना कर ही आगे बढ़ना चाहिए। मुख्य अतिथि डॉ. दया दवे ने जाति के उत्सव पर वयं राष्ट्रे जागरण का संदेश दिया कार्यक्रम का संचालन डॉ. मुकेश कुमार सुखवाल और आभार प्रदर्शन चिराग धुप्या ने किया। उत्सव का समापन पौधारोपण और अल्पाहार वितरण के साथ हुआ।

सर्टिफिकेट कोर्स में सहभागिता

महाविद्यालय के संकाय सदस्यों ने इग्नू द्वारा छह दिवसीय सर्टिफिकेट कोर्स में भाग लिया। कोर्स यूजीसी स्पॉन्सर्ड था जिसका विषय प्रोफेशनल डेवलपमेंट प्रोग्राम इंप्लीमेंटेशन ऑफ एनईपी 2020 था। इस कार्यक्रम में यूनिवर्सिटी, कॉलेज टीचर्स और सभी शिक्षकों को भाग लेना था। महाविद्यालय के सभी संकाय सदस्यों ने इसमें ऑनलाइन भाग लिया। कोर्स के अंत में मूल्यांकन भी किया गया। सभी को सर्टिफिकेट प्रदान किए गए।

निबंध प्रतियोगिता का आयोजन

वैलनेस टीम और विद्या भवन के संयुक्त तत्वावधान में निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया जिसका विषय मानसिक स्वास्थ्य था। प्रतियोगिता में महाविद्यालय के सभी विद्यार्थियों ने भाग लिया।

संतोष उपाध्याय पुरस्कृत

रमा मेहता राइटिंग ग्रांट 2022 के तहत महाविद्यालय की प्राध्यापिका डॉ. संतोष उपाध्याय को राजस्थानी लेखन में पुरस्कृत किया गया। इस मौके पर हिन्दी में अनु मिश्रा, उर्दू में शहनवाज यूसुफ, अंग्रेजी में यशस्वी गौड़ सहित 25 अन्य रचनाकारों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में रमा मेहता के जीवन से जुड़ी प्रदर्शनी भी लगाई गई जिसका उद्‌घाटन तीन दशकों से लेखन में सक्रिय गीतांजलि श्री ने किया। रमा मेहता ट्रस्ट द्वारा उभरती लेखिकाओं को प्रोत्साहित किया जाता है।

डॉ. संतोष को सम्मानित करती गीतांजलि श्री।

बजट पर बैठक

नगर निगम सभागार में हायर एजुकेशन डिपार्टमेंट द्वारा बजट पर एक बैठक का आयोजन किया गया जिसमें हायर एजुकेशन से संबंधित सुझाव मांगे गए थे विद्या भवन के स्टाफ सदस्य, विद्यार्थी एवं ऑफिस स्टाफ द्वारा इस में अपने विचार प्रस्तुत करने हेतु भाग लिया गया।

पांच दिवसीय कार्यशाला

विद्या भवन सोसायटी की वेलनेस टीम द्वारा कॉलेज में सभी सैक्षणिक एवं सह-शैक्षणिक सदस्यों हेतु पांच दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 10 टेक्निकल सेशन आयोजित किए गए जो मानसिक स्वास्थ्य, शिक्षा मनोविज्ञान, तनाव तथा जेंडर आदि विषयो से संबंधित थे। इन विषयों पर गहरी समझ विकसित करने हेतु समूह चर्चा, रोलप्ले, ब्रेनस्ट्रोमिंग आदि गतिविधियों का आयोजन किया गया।

जस्टिन को बधाई

बीएड सेकंड ईयर के विद्यार्थी जस्टिन जैस ने नेशनल लेवल पर फुटबॉल के रेफरी बनने का सौभाग्य प्राप्त किया यह राजस्थान का एकमात्र विद्यार्थी था जिसे यह पद मिला।

आधार से लिंक करना सीखा

महाविद्यालय में भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार बी एल जोशी ने मतदान पहचान पत्र को आधार से लिंक करना सिखाया। उन्होंने पीपीटी पर अपना प्रस्तुतीकरण दिया

तथा महाविद्यालय के अध्यापकों को उनके मोबाइल पर वोटर हेल्पलाइन एप डाउनलोड करवा कर अपने आधार कार्ड को मतदाता सूची से लिंक करवाने में मदद की। उन्होंने बताया कि मतदाता स्वयं एप की मदद से मतदान हेतु पंजीकरण करवाने का कार्य कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि प्राध्यापक अपने साथियों कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को भी इस ऐप से परिचय करवाएं और उनके मतदान पहचान पत्र को आधार से लिंक करना बताए। इस मौके पर सभी प्राध्यापकों ने प्रश्न पूछ कर अपनी शंकाओं का समाधान किया।

वार्षिकोत्सव का आयोजन

महाविद्यालय में वार्षिक उत्सव का आयोजन हुआ। प्राचार्य डॉ. फरजाना इरफान ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष अजय एस. मेहता थे। कार्यक्रम में अतिथि प्रो. एम.पी. शर्मा, प्रो. डीएन दानी एवं प्रो. सुषमा तलेसरा उपस्थित थे। कार्यक्रम का आगाज रंगारंग प्रस्तुतियों के साथ हुआ। साथ ही इस कार्यक्रम में पूरे वर्ष में आयोजित होने वाले यूनियन कार्यक्रम के तहत जिन विद्यार्थियों ने प्रथम, द्वितीय, एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया उन्हें पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र वितरित किए गए।

सेंन्च्युरी का जंप है पुस्तक प्रदर्शनी

विद्या भवन सोसायटी एवं अजीम प्रेमजी विश्व विद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में तीन दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी विद्या भवन गोविन्दराम सेकसरिया शिक्षक महाविद्यालय में लगी। यह प्रदर्शनी में पिछले दो शताब्दियों में भारत एवं भारतीय उपमहाद्वीप में उपयोग में लाई गई पुस्तकों का संग्रहण है जिनमें पाठ्यपुस्तकें, पुरुस्कृत किताबें, संदर्भग्रंथ, शब्दकोश, ग्रंथ, एटलस, विद्यालय प्रबंधन, शिक्षणशास्त्र, बालमनोविज्ञान, स्वास्थ्य नियमावली, पाठ्यक्रम पत्रावली, शैक्षिक पत्रिकाएं, रिपोर्ट आदि का संकलन है। प्रदर्शनी में विद्या भवन सोसायटी से जुड़े सभी प्रकाशनों का भी प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के जीव विज्ञान विभाग के पूर्व अधिष्ठाता प्रो. महीप भटनागर ने किया। प्रदर्शनी के दूसरे दिन दिल्ली विश्व विद्यालय की पूर्व प्रो. साधना सक्सेना का उद्बोधन हुआ। प्रो. साधना सक्सेना ने कहा कि स्कूलों में विद्यार्थियों को कम पढ़ाया जाए, गहराई से पढ़ाया जाए तथा बेहतर पढ़ाया जाए। उन्होंने विद्यार्थियों के स्वयं पढ़ने-सीखने के लिए सक्षम बनाए जाने पर जोर दिया तथा कहा कि विद्यार्थियों के साथ ज्यादा चीजें सतही स्तर पर करने के बजाए कितनी अवधारणाएं बेहतर तरीके से पढ़ाई जा सकती है इस पर काम करना होगा। प्रो. साधना सक्सेना ने कहा कि वर्तमान में जिस तरह से विज्ञान पढ़ाया जा रहा है उससे कई दिक्कतें पैदा हो रही है क्योंकि विज्ञान और तकनीकी की प्रगति की गति बहुत तेज है और जो लोग प्रशिक्षित किए जा रहे हैं वे इससे तालमेल नहीं बैठा पा रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह पुस्तक प्रदर्शनी सेंन्च्युरी का जंप है जो पिछले 200 वर्षों की पाठ्यपुस्तक लेखन के परिवर्तन प्रतिबिंबित करती है तथा आज की समझ देती है। यह प्रदर्शनी हमें यह विश्लेषण करने का भी मौका देती है कि गुणवत्तापूर्ण पाठ्यपुस्तकें किसको कहेंगे, स्कूली विज्ञान शिक्षण को लेकर क्या समझ है, पिछले दो शताब्दियों में पाठ्यपुस्तक लेखन में किस तरह के परिवर्तन हुए हैं और ये परिवर्तन किसके द्वारा निर्देशित रहे हैं। उन्होंने आज के समय की दो महत्वपूर्ण समस्याओं पर फोकस किया कि विद्यार्थियों में स्कूल आने से पहले बनने वाली उनकी पूर्व एवं गलत अवधारण ाएं विज्ञान सीखने में बाधा उत्पन्न करती है, उनसे कैसे जूझा जाएं और इसके लिए किस तरह की किताबें बनाई जाएं यह महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। मुख्य अतिथि अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के प्रो. वरधराजन ने कहा कि पुस्तकों का यह संग्रह बताता है कि लोग शिक्षा में किस तरह के नवाचार करते आए हैं। इन्हें हम अलग-अलग नजरिए से देख सकते हैं। उन्होंने कहा कि यह संग्रह बनाने के लिए हम यह तय नहीं करेंगे कि कौनसी पाठ्यपुस्तक अच्छी और कौनसी बुरी है। यह काम पाठकों का है। हमें किसी भी विषय कि पाठ्यपुस्तक मिलेगी हम शामिल करेंगे और विश्लेषण कर अपनी समझ बना सकेंगे। विशिष्ट अतिथि अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के प्रो. हृदयकांत दीवान ने कहा कि हमारी पाठ्यचर्या ऐसी हो कि बच्चों में रूचि पैदा हो, उनमें आत्मविश्वास बढ़े और वे खुद सोचे कि मैं खुद सीख सकता हूं। कार्यक्रम में विद्या भवन सोसायटी के अध्यक्ष अजय एस. मेहता, मुख्य संचालक अनुराग प्रियदर्शी, महाविद्यालय के प्राचार्य अरविन्द आशिया, प्रो. कमल महेन्द्रु, पूर्व मुख्य संचालक सूरज जेकब आदि उपस्थित थे।

पुस्तक प्रदर्शनी के दौरान आयोजित चर्चा में प्रो. साधना सक्सेना

रिपोर्टर : डॉ. संतोष उपाध्याय

विद्या भवन गांधी शिक्षा अध्ययन संस्थान (संयुक्त इकाई)

प्रवेषोत्सव कार्यक्रम

बी.एड. प्रथम वर्ष का नवीन सत्र 2022-2023 का प्रवेश कार्य 10 अक्टूबर, 2022 से 20 दिसम्बर, 2022 के मध्य सम्पन्न हुआ। इस वर्ष पूरे 100 विद्यार्थियों का प्रवेश हुआ जिसमें 70 विद्यार्थियों ने कला संकाय, 25 विद्यार्थियों ने विज्ञान संकाय में एवं 5 विद्यार्थियों ने वाणिज्य संकाय में प्रवेश लिया। प्रवेश कार्य ऑनलाइन व ऑफलाइन दोनों ही मोड़ में पूर्ण हुआ। प्रवेश प्रक्रिया पूर्ण होने के बाद बी.एड. प्रथम वर्ष की विधिवत कक्षाएं प्रारम्भ हुई।

अभिनवन कार्यक्रम

बी.एड. द्वितीय वर्ष का इंटर्नशिप से संबंधित कार्य को समझाने हेतु 6 दिवसीय ओरियन्टेशन कार्यक्रम हुआ। कार्यक्रम में इंटर्नशिप के उद्देश्य तथा करणीय कार्यों पर सत्र हुए। विद्यार्थियों को लघुपाठ योजनाओं का प्रारूप, इकाई योजना, नील-पत्र निर्माण आदि से अवगत करवाया गया। करणीय कार्यों में क्रियात्मक अनुसंधान, पुस्तक समीक्षा, टाइम टेबल निर्माण, पी.पी.टी. निर्माण, विद्यालय रिकार्ड्स संधारण, साहित्यिक व सांस्कृतिक गतिविधियों पर समझ बनाई गई।

शिक्षण कौशल कार्यक्रम

शिक्षण कौशल कार्यक्रम का अभिविन्यास कार्यक्रम संचालित हुआ। प्रतिवर्ष दोनों विषय में 5-5 कौशल करवाई जाती है परन्तु इस वर्ष एक नवाचार किया गया जिसमें एक विषय में तीन कौशल और दूसरे विषय में दो कौशल पूर्ण कराने का कार्य किया गया। इससे समय व स्टेशनरी की बचत हुई। अभिविन्यास कार्यक्रम में प्रत्येक कौशल पर बहुत समय दिया गया जिससे बच्चों को सीखने का अधिक समय मिला।

अंतरांकन रजिस्टर का निरीक्षण

आंतरिक अंतरांकन संबंधी रजिस्टर को पूर्ण कर पंजीयक बीकानेर, शिक्षा विभागीय परीक्षा राजस्थान द्वारा प्रेषित ऑनलाइन पोर्टल पर अंकन प्रेषित किए गए। डाईट, गोवर्धन विलास, उदयपुर द्वारा अंतरांकन रजिस्टर का निरीक्षण कर जांच की गई।

इन्टर्नशिप ओरियन्टेषन

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष 2021-2022 का 12 दिवसीय ओरियन्टेशन कार्यक्रम सम्पन्न करवाया गया। ओरियन्टेशन का मुख्य उद्देश्य बच्चों में इन्टर्नशिप में जाने से पूर्व विद्यालय के विभिन्न कार्यों की समझ विकसित करना था। इन्टर्नशिप संबंधित विभिन्न कार्य विभिन्न चरणों में करवाया गया। इन्टर्नशिप कार्य का मूल्यांकन किया गया।

ऑनलाइन स्कूल विजिट

ग्रीष्मावकाश से पूर्व ट्यूटोरियल प्रभारियों ने अपने संबंधित विद्यार्थी से संपर्क कर उनसे आवंटित विद्यालय में करवाये जा रहे कार्यों को देखने का प्रयास किया। इसके लिए मेंटर से संपर्क बनाए रखा। प्राचार्य ने भी गूगल मीट के माध्यम से सभी मेंटर के साथ बच्चों से संपर्क किया व आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

अभिनव कार्यक्रम

महाविद्यालय में बी.एड. द्वितीय वर्ष का 6 दिवसीय अभिनव कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम में 94 विद्यार्थियों के लिए इंटर्नशिप के उद्देश्य, करणीय कार्य तथा फाइल निर्माण, लघु पाठ योजना का प्रारूप तथा इकाई योजना, समूह कार्य, विद्यालय रिकार्ड्स आदि की जानकारी दी गयी।

अनुरूप शिक्षण पाठ योजना, इकाई योजना, नील पत्र निर्माण व अधिगम सामग्री अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में अनुरूप शिक्षण की पाठयोजना से लगाकर नील-पत्र निर्माण की बारीकियां तथा अधिगम को रोचक व प्रभावी बनाने वाले टी. एल.एम. बनाने के सम्बन्ध में इस अभिविन्यास कार्यक्रम में चर्चा की गयी तथा दूसरे से सातवें कालांश तक विद्यार्थी अपने विषयाध्यापक के साथ पाठ योजना निर्माण हेतु क्रमशः प्रथम व द्वितीय विषय के विषयाध्यापकों के साथ बैठे।

समालोचना पाठ प्रस्तुतीकरण

इन्टर्नशिप समाप्ति के पश्चात् डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष के विषयानुसार समालोचना पाठ प्रस्तुत करवाये गये। अनुरूप कक्षा के समक्ष ही बच्चों ने अपने पाठ का प्रस्तुतीकरण किया।

सांस्कृतिक व साहित्यिक कार्यक्रम

बी.एड. प्रथम वर्ष में "विद्या भवन में मेरा प्रथम दिवस" विषयक निबन्ध प्रतियोगिता हुई। प्रतियोगिता का उद्देश्य विद्यार्थियों द्वारा विद्यालय में जाकर इनका आयोजन करवाना सीखाना था।

एकल गीत प्रतियोगिता में प्रथम कमलकान्त टेलर व खुशबू लौहार रहे।

महाविद्यालय में गणित विभाग द्वारा गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन के जन्म दिवस पर राष्ट्रीय गणित दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कविता, नाटक तथा संकाय सदस्यों द्वारा व्याख्यान आदि दिये तथा एस.सी.इ.आर.टी. में गणित प्रयोगशाला का अवलोकन करवाया गया जिससे उनमें वैज्ञानिक व गणितीय दृष्टिकोण अभिवृत्ति व रूचि का विकास हो।

महाविद्यालय में एकल नृत्य प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर रिंकू कुंवर तथा निशा पालीवाल रहे।

जीवन विज्ञान कौशल पर चर्चा

मुनि सुरेश कुमार के सहवर्ती मुनि सम्बोध कुमार मेघांश की चर्चा का आयोजन गांधी स्वराज द्वारा किया गया। वार्ता का विषय "स्किल डवलपमेंट विद सोल टेक्नॉलोजी केप्सूल कोर्स" रहा। प्रवास प्रक्रिया, स्मृति बढ़ाने हेतु योगमुद्रा, नकारात्मक विचारों को परे रखने की कला पर जोर दिया गया।

स्काउट गाइड बेसिक षिविर

डी.एल.एड. प्रथम वर्ष के 46 विद्यार्थियों ने राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड द्वारा आयोजित स्काउट गाइड बेसिक शिविर में उदय निवास पर भाग लिया गया। शिविर आवासीय था जिसमें विद्यार्थियों को पूर्ण अनुशासन में रखते हुए प्रभातफेरी, व्यायाम, योगा, श्रमदान, भ्रमण, रैली, हाइक व अन्य गतिविधियों का प्रशिक्षण बड़ी बारिकी से दिया गया जो उनके भावी जीवन में काफी उपयोगी रहेगा।

नवागंतुक स्वागत व स्नेह मिलन

नवीन सत्र के विद्यार्थियों के लिए नवागन्तुक स्वागत व स्नेह मिलन कार्यक्रम हुआ। मुख्य अतिथि प्रो. सुषमा तलेसरा, सेवानिवृत प्राचार्या, वी.बी.जी.एस.टी.सी., अजय एस. मेहता, अध्यक्ष, विद्या भवन सोसायटी, प्रसून कुमार, अखिल कुमार, डॉ. फरजाना, प्राचार्या, वी. बी.जी.एस.टी.सी. तथा ज्ञानचन्द्र सोनी मौजूद थे। कार्यक्रम में विद्यार्थी स्वागत, खेलकूद, श्रमदान, पौधरोपण, कैम्पस पहचान तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी करवाए गए। टीम बिल्डिंग वाले खेल खिलाए गए। प्रो. तलेसरा ने विद्या भवन के मूल्यों को आगे बढ़ाने पर जोर डाला तथा मेहता साहब ने गांधी मूल्यों को अपनाने व उन पर निरन्तर चलने का संदेश दिया। शिक्षा सलाहकार प्रसून कुमार ने विद्यार्थियों को स्पेस देने की बात कही जिससे वे स्वतन्त्र होकर हर क्षेत्र में प्रयास करने के लिए तत्पर रहे। मुख्य वित्त अधिकारी अखिल त्रिवेदी ने अच्छे शिक्षण के गुण अपनाने के लिए प्रयासरत रहने को कहा।

विदाई एवं पारितोशिक वितरण

महाविद्यालय में विदाई एवं पारितोषिक वितरण समारोह आयोजित किया गया। महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. भगवती अहीर ने मुख्य अतिथि डॉ. अंकुर तुली का उपरणा ओढ़ा कर स्वागत किया। कार्यक्रम की शुरूआत मां सरस्वती के चरणों में पुष्प अर्पित करके की गई। महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. भगवती अहीर ने स्वागत उद्‌बोधन दिया। इसके पश्चात् विद्यार्थियों के उत्साहवर्धन हेतु पुरस्कार वितरित किए गए। कार्यक्रम की इसी श्रृखंला में छात्र एवं छात्राओं ने नृत्य एवं गीत प्रस्तुत किए। विद्यार्थियों ने बहुत मनमोहक प्रस्तुतियां दी। इसके बाद अध्यक्षा डॉ. तारा कुमावत ने अपना उद्‌बोधन दिया। कार्यक्रम में छात्र ऐश्वर्या राणावत एवं गति शर्मा अपने अनुभवों को साझा किया।

रिपोर्टर : डॉ. सरिता जैन

...पृष्ठ 6 : वि.भ. सी.सै. स्कूल, रामगिरि का शेष

अवसर उपलब्ध करवाया।

पावर लिफ्टिंग

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय फिला, कुराबड़, में पावर लिफ्टिंग प्रतियोगिता में विद्यालय के भावेश डांगी तथा राहुल पालीवाल ने भाग लिया। प्रतियोगिता में दोनों खिलाड़ियों ने अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन किया। भावेश डांगी ने चौथा व राहुल पालीवाल ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। भावेश डांगी ने 66 किलोग्राम वर्ग में तथा राहुल पालीवाल ने 74 किलोग्राम वर्ग में यह उपलब्धि हासिल की।

वॉलीबॉल जिला स्तरीय प्रतियोगिता

17 वर्ष छात्र वॉलीबॉल प्रतियोगिता राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सगतड़ा, सराड़ा, में आयोजित हुई। प्रतियोगिता में स्थानीय विद्यालय की टीम ने भाग लेकर अपना उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया। विद्यालय की टीम प्रतियोगिता की विजेता टीम रही तथा विद्यालय के तीन खिलाड़ियों का चयन राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए हुआ जो कि राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय राजेंद्र मार्ग भीलवाड़ा में आयोजित हुई। टीम के खिलाड़ियों में सौरव डांगी, प्रिंस डांगी, आयुष डांगी, भुवनेश डांगी, दिव्यांशु डांगी, चिराग डांगी, अंशुल सेन अविनाश तावड़, अक्षय डांगी शामिल थे। 19 वर्षीय छात्र वॉलीबॉल छात्र प्रतियोगिता राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय वल्लभनगर, में खेली गई। विद्यालय की टीम से कौशल डांगी, अतुल चौबीसा, तुषार डांगी, गोविंद डांगी, ऋषभ चौबीसा, महेंद्र सिंह, भावेश डांगी, सोमनाथ ने भाग लिया।

रिपोर्टर : पुष्पा राजपूत

...पृष्ठ 8 : वि.भ. पॉलिटेक्निक कॉलेज का शेष

फ्रेशर पार्टी व मेल-जोल मेला

प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए द्वितीय व तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों के द्वारा फ्रेशर पार्टी का आयोजन किया गया जिसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में आपसी समन्वय बढ़े व विद्यार्थी अपनी कला को प्रदर्शित कर सके। इसी के साथ मेला भी लगा जिसमें विद्यार्थियों ने खाने-पीने, खेल की स्टॉल लगाई। जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों में उद्यमिता की भावना विकसित करना था। विद्यार्थियों ने सोलोडांस ग्रुपडांस, सोलो सोन्ग व ग्रुप सोन्ग, मिमिकरी, मार्शल आर्ट और रेम्पवॉक की प्रस्तुतियां दीं। अतिथी विद्या बंधु गोपाल बम्ब, नवीन व्यास, हरीश माथुर व पूर्व विद्यार्थी मॉडल विप्रा मेहता थीं।

महाविद्यालय में प्रार्थना सभा शुरू

जीवन में हर नया काम प्रारम्भ करने से पहले अपने ईश्वर से प्रार्थना करते हैं उसके बाद ही कार्य प्रारम्भ करते हैं। यह मनोवृति स्कूल में सिखाई जाती है लेकिन महाविद्यालय में आने के बाद यह नहीं होती। इससे विद्यार्थियों में शांति एवं आध्यात्मिकता की कमी महसूस की जा रही है। इन सभी को ध्यान मे रखते हुए प्राचार्य अनिल मेहता द्वारा महाविद्यालय में इसकी शुरुआत कीं। इससे विद्यार्थी में उदारता, सहनशीलता, अनुशासन तथा मेलजोल के गुणों का विकास तथा देश के प्रति प्यार व समर्पण की भावना का विकास व आत्मबल मजबूत होगा।

रिपोर्टर : डॉ. स्नेहलता कोठारी

...पृष्ठ 7 : वि.भ. पब्लिक स्कूल का शेष

हुए अपनी प्रतिभा को साबित किया। इस प्रदर्शनी में विद्यार्थियों ने विभिन्न विषयों विद्युत चुम्बकीय प्रेरण, जलचक्र, अपोहन मॉडल, कार्बन केप्चर और संग्रहण, न्यूटन के नियम आधारित मॉडल, मानव शरीर में कोविड-19 की गतिविधि इत्यादि पर मॉडल बनाए। कला प्रदर्शनी में कक्षा-1 से कक्षा-12 तक के विद्यार्थियों ने बेस्ट आउट ऑफ वेस्ट की तहज पर विभिन्न उत्पाद ऑरीगेमी, अफ्रिकन डॉल, टीशू पेपर रोज, बेंगल वॉल हेंगिंग आदि प्रदर्शित किए। चित्रकारी में विद्यार्थियों ने मिनिएचर, मधुबनी, मीनाकारी, बोतल चार्ट का प्रदर्शन किया।

रिपोर्टर : रुचि शर्मा

विद्या भवन शिक्षा सन्दर्भ केन्द्र

शिक्षा संबल कार्यक्रम

हिंदुस्तान जिंक द्वारा समर्थित शिक्षा संबल कार्यक्रम के तहत निम्न गतिविधियाँ संचालित की गईः-

कक्षा शिक्षण

कक्षा शिक्षण का मुख्य उद्देश्य कक्षा 9 व 10 के विद्यार्थियों को आगामी परीक्षा के लिए तैयार करना है। प्रोजेक्ट टीम का प्रत्येक सदस्य एक शिक्षण दिवस में 4 कक्षाओं के साथ काम करता है। विद्यार्थियों की आवश्यकता को देखते हुए अतिरिक्त व पेड कक्षाओं का संचालन भी किया गया। जुलाई से दिसम्बर माह के दौरान कुल 18,301 नियमित कक्षाओं का लक्ष्य था जिनमें से 17,442 कक्षाएं संचालित की गई।

विज्ञान प्रयोग व पुस्तकालय गतिविधियां

करके सीखने व समझने के उद्देश्य की पूर्ति के लिए कक्षा 9 व 10 के विद्यार्थियों के साथ पाठ्यक्रम से सम्बंधित प्रयोग गतिविधियाँ की जाती हैं। साथ ही पढ़ने व समझने की आदत के विकास हेतु पुस्तकालय कक्षाओं का संचालन किया जाता है, और विद्यार्थियों को उनकी रूचि अनुसार अतिरिक्त किताबें नियमित तौर पर उपलब्ध करवाई की जाती हैं।

दीपावली कक्षाएं

दीवाली अवकाश के दौरान विद्यार्थियों को अतिरिक्त सम्बल प्रदान करने के लिए अतिरिक्त कक्षाओं का संचालन किया गया, इन कक्षाओं में विद्यार्थियों को वर्कबुक के साथ अभ्यास करवाने पर फोकस किया गया एवं पूरे हो चुके पाठ्यक्रम का दोहरान कराया गया। 77% स्कूलों में अवकाश के दौरान 9 दिनों तक विज्ञान, गणित व अंग्रेजी विषय की कुल 2081 कक्षाएं फिल्ड कर्मियों तथा वालंटियर्स द्वारा संचालित की गयीं।

सीखने-सिखाने की सामग्री

कार्यक्रम के तहत सभी विद्यार्थियों को विज्ञान, गणित व अंग्रेजी विषय की वर्कबुक तथा 10वीं व 12 वीं के विद्यार्थियों के लिए इन विषयों के मॉडल पेपर उपलब्ध करवाए गए। अतिरिक्त कक्षाओं में विद्यार्थियों द्वारा इनके उपयोग पर फोकस किया गया।

फैलोशिप

फैलोशिप पायलट फेज के तहत वर्तमान सत्र में 10 स्कूलों में कक्षा-6 से 8 के विद्यार्थियों के साथ काम किया जा रहा है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों के लर्निंग गैप को कम करने तथा विषय की पुख्ता समझ पर काम करना है। यह राजकीय अध्यापकों के साथ मिलकर पूरा किया जाना है ताकि कक्षा-शिक्षण के एक बेहतर मॉडल को विकसित किया जा सके। इस सत्र में कक्षा शिक्षण के तयशुदा लक्ष्य का 85% काम दिसम्बर माह तक पूरा किया जा चुका है।

रीडिंग मेला

कार्यक्रम के तहत विद्यार्थियों में सीखने के आत्मविश्वास को बढ़ाने के उद्देश्य से रीडिंग मेलों का आयोजन किया जाता है। रीडिंग मेले में पढ़ना-समझना, करके देखना-सीखना, तथा खेल के माध्यम से सीखना आदि के लिए गतिविधियों का आयोजन किया जाता है और इनमें विद्यार्थियों की भागीदारी सुनिश्चित की जाती है। इस सत्र में अब तक कुल 12 रीडिंग मेलों का आयोजन किया गया।

प्री-वोकेशनल कोर्स

शिक्षा संबल से जुड़े विद्यार्थियों के लिए दो प्री-वोकेशनल कोर्स का संचालन विद्या भवन पॉलिटेक्निक और विद्या भवन कृषि विज्ञान केंद्र के सहयोग से किया गया। इस गतिविधि का उद्देश्य विद्यार्थियों को आने वाले दिनों में अपने करियर व अध्ययन के बारे में समझ बनाने तथा निर्णय लेने में संबल प्रदान करना है। इलेक्ट्रिकल तथा कृषि क्षेत्र से जुड़े एक-एक कोर्स के संचालन में सीनियर सेकंडरी स्तर के कुल 60 विद्यार्थियों ने भागीदारी की।

कैरियर काउंसलिंग

आगामी अध्ययन तथा पारम्परिक व गैर पारम्परिक रोजगार के अवसरों की जानकारी व जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से इस सत्र में सीनियर सैकण्डरी कक्षा के विद्यार्थियों के लिए लक्षित कुल 12 करियर काउंसलिंग सत्र में से दिसम्बर माह तक 7 सत्र का आयोजन किया जा चुका है।

शिक्षण प्रशिक्षण कार्यशाला (झारखंड)

केंद्र की टीम ने बीएसएनएल प्रशिक्षण केंद्र, रांची में 28 और 29 सितंबर, 2022 के दौरान झारखंड शिक्षा परियोजना परिषद द्वारा समर्थित और केयर इंडिया द्वारा आयोजित दो दिवसीय स्टेम लर्निंग कार्यशाला का संचालन किया। जिसमें झारखंड के घुमला, खूंटी और रांची जिलों के 3 के.जी.वी.पी. के 60 गणित और विज्ञान शिक्षकों ने भाग लिया। इस दौरान केंद्र की टीम द्वारा साझा किए गए हैंड्स-ऑन गतिविधि के माध्यम से विज्ञान और गणित सीखने के अनुभवों से प्रतिभागी लाभान्वित हुए।

उन्होंने समझा कि प्रकाश आदि जैसी कठिन प्रयोग आधारित अवधारणाओं के शिक्षण-अधिगम के लिए किस प्रकार स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री का उपयोग किया जा सकता है। उक्त प्रशिक्षण के परिणामस्वरूप, 50 शिक्षकों के एक और बैच का आवासीय प्रशिक्षण उदयपुर में जनवरी, 2023 में प्रस्तावित है।

शिक्षक ङ्कशिक्षण कार्यशाला, (छत्तीसगढ़)

शिक्षा संदर्भ केन्द्र, एस.जे.वी.सी.(सार्थक जन विकास संस्थान) और बी.ए.एल.सी.ओ. (सीएसआर पहल) के सहयोग से अक्टूबर 2021 में कोरबा, छत्तीसगढ़ में शिक्षा संबल के समान ही एक परियोजना 'प्रोजेक्ट कनेक्ट' शुरू किया गया। इस कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं में केंद्र के विज्ञान, भाषा और गणित समूह के सदस्यों ने समय-समय पर में योगदान दिया। हाल ही में, 8 और 9 नवंबर, 2022 को एसजेवीएस द्वारा बाल्को और वीबीईआरसी, उदयपुर के सहयोग से दो दिवसीय शिक्षक क्षमता निर्माण कार्यशाला का आयोजन किया गया था। यह कार्यशाला कोरबा जिले के उन 6 सरकारी स्कूलों के शिक्षकों के लिए आयोजित की गई, जहां

शेष पृष्ठ 17 पर...

...पृष्ठ 1 का शेष

✎ कर्सिव राइटिंग की व्याख्या "कथिब" शब्द से की जाती है। यह किताब (किताबें) शब्द से आया है। लिखित पुस्तकें इन दिनों आसानी से उपलब्ध होता है। 3000 वर्ष पूर्व यह दुर्लभ था। किताब होना मुखर था। लोककथा यह है कि ग्रीक ने किताबें छीन लीं जाती थी अगर किसी के पास होता था। इसकी एक नई प्रति तैयार की जाती थी और मूल को अपने पुस्तकालय में रख लिया जाता था। क्योंकि उस समय किताब रखना दुर्लभ था। लिखने के लिए बहुत सारे श्रम की आवश्यकता होती थी। इसलिए इसने लेखकों के लिए जानबूझकर लंबे शब्दों को रखने के लिए व्यावसायिक समझ बनाई। बाद में जब लेखन तुलनात्मक रूप से आसान हो गया, तो सुलेख-एक कला के रूप में बदल गया। कई कॉर्पोरेट अभी भी कैलीग्राफी का उपयोग लोगों को आकर्षित करना के लिए करते हैं। इसका उपयोग कॉर्पोरेट उपस्थिति के बारे में बयान देने के लिए किया जाता है। विश्वविद्यालय सुलेख का उपयोग डिग्री या धार्मिक पाठ को प्रिंट करने के लिए करते हैं। कैलीग्राफी के दायरे को देखते हुए कुछ छात्रों को इसे सीखने में रुचि हो सकती है। यह सब घसीट लेखन सिखाने के उद्देश्य को धुंधला कर देता है - यह अनुचित है।

✎ भावना- कर्सिव राइटिंग छात्रों को सीखने के लिए आकर्षित करने में मदद करती है।

✎ प्रो. रमाकांत आजकल हममें से शायद ही कोई कर्सिव में लिखता है। कर्सिव सीखने के बारे में सोचें जो अब उपयोग में नहीं है। कर्सिव लेखन अकेले मोटर विकास कौशल विकसित नहीं कर सकता महत्वपूर्ण हैं। बच्चे के स्कूल आने से पहले ही इस बात का ध्यान रखा जाता है। वह रेत पर चित्र बनाता और खेलता है। प्रेरक कौशलों के निर्माण के लिए यह काफी अच्छा व्यायाम है। हमें इसे और आगे ले जाने पर काम करना चाहिए। कर्सिव राइटिंग पर समय क्यों बर्बाद करें।

✎ भावनाः क्या आप कह रहे हैं कि हमें बच्चों को कर्सिव रीडिंग नहीं सिखानी चाहिए।

✎ प्रो. रमाकांतः मैं ऐसा नहीं कह रहा हूं। यदि आपको इसका कारण मिल सकता है, तो कृपया इसे करें। उदाहरण के लिए, हम सभी ने सीखा है कि संज्ञा एक नामकरण शब्द है। संज्ञा की यह परिभाषा हम बच्चों को पढ़ाते रहते हैं। मैं शीघ्र ही आपको कारण बताऊँगा कि संज्ञा की यह अवधारणा सही क्यों नहीं है। मैं सवाल उठाऊंगा और इसके बारे में सोचने के लिए आपको कारण दूंगा। मैं यहां आपको यह बताने के लिए नहीं हूं कि आपको कक्षा में क्या करना चाहिए- कक्षा आपकी है, और आप सभी को इसे करने का कारण ढूंढना चाहिए। लेकिन केवल तभी जब आपके पास मेरे प्रश्न को अस्वीकार करने का कोई कारण हो। मैंने आपको कई कारण बताए हैं कि क्यों कर्सिव राइटिंग की जरूरत नहीं है। मैं आपको सबूत देता हूं कि मैं ऐसा क्यों कह रहा हूं।

✎ प्रो. रमाकांतः क्या आप भारत में ऐसे मूलपाठ के नाम जानते हैं जो अभी भी कर्सिव और कैलीग्राफी में टेक्स्ट है। यह भारत का संविधान है। मूल संविधान हाथ से लिखी गई है। अब देखते हैं कि हम बच्चों को वर्णमाला से शुरू करके अंग्रेजी क्यों पढ़ाते हैं।

✎ भावना- यह एक भाषा का आधार है।

✎ प्रो. रमाकांतः appendix में 'ए' apple में 'ए' से अलग है। देवनागरी में यह ऐ appel, appendix तथा आ father *में होता है। sofa में यह है अलग a की ध्वनी है। अब देखिए हम बच्चों को क्या पढ़ाते हैं। हम 'a' की तीनों ध्वनियां नहीं सिखाते। हम बच्चों को इस प्रकार की 'a' ध्वनि नहीं सिखाते हैं फिर भी वे इसे सीखते हैं। everyday में 'e' की ध्वनि क्या होती है। पहला 'e' और दूसरा 'e' everyday में अलग है।

✎ ज्योति- आवाज में फर्क क्यों।

✎ प्रो. रमाकांत- हम कुछ नहीं कर सकते। हम कुछ नहीं कर सकते। लेकिन यह नियम द्वारा निर्देशित है।

✎ दूसरा मुद्दा जिस पर हम चर्चा कर रहे हैं वह है अक्षरों के माध्यम से बच्चों को भाषा पढ़ाना। उदाहरण के लिए, हम विभिन्न शब्दों के माध्यम से 'p' पढ़ाते हैं। लेकिन apple में दो 'p' है जो अलग होता है। आश्चर्यजनक बात यह है कि हम बच्चों को इस तरह के जटिल विचार नहीं सिखाते हैं, लेकिन हम बच्चों को इसका सही उच्चारण करते हुए पाते हैं- कोई भी बच्चा मेक को 'makee', और shakee उच्चारण नहीं करता है।

✎ प्रो. रमाकांत- कृपया सोचें- वर्णमाला और भाषा के पहले कौन आता है।

✎ भावना- वर्णमाला भाषा की उत्पत्ति है, देवनागरी के समान।

✎ प्रियंकाः वर्णमाला से शुरू होकर सरल से जटिल वर्णमाला की ओर बढ़ रही है। फिर हम वर्णमाला से शब्द की ओर बढ़ते हैं।

✎ दिव्या- उदाहरण के लिए, जब हम apple के लिए 'A' पढ़ाते हैं- हम अक्षर से शब्द और शब्द से अक्षर सीखते हैं।

✎ प्रो. रमाकांतः पहले मैं भावना जी के सवाल का जवाब दूं. बहुत से लोग बागरी या भील बोलते हैं। उनके पास कोई अक्षर नहीं है। क्या भाषा अक्षर के बाद आती है? हम इस जरूरी नहीं समझते हैं। यदि हम बच्चों को भाषा सिखायेंगे

तो वे वर्णमाला सीख जाएंगे।

✎ भावना- मेरा सवाल है कि हम अक्षरों के माध्यम से भाषा क्यों पढ़ाते हैं। और कैसे बच्चे बिना सिखाए ही कई शब्द सीख जाते हैं।

✎ प्रियंका: वाक्य शुरू करते समय हम पूंजी का प्रयोग करते हैं।

✎ प्रो. रमाकांत- हम बच्चों को ये सब कविता जैसे अर्थपूर्ण प्रसंग के माध्यम से क्यों नहीं पढ़ाते- जिसमें बड़े और छोटे दोनों अक्षर हों। यदि हम भाषा शिक्षण के बारे में सोचते हैं तो हम बहुत सी बातों को बाहर कर देंगे। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि आपको अक्षर नहीं सिखाना चाहिए। लेकिन शब्द या वाक्य पढ़ाने से पहले केवल अक्षर का ही प्रयोग न करें।

अनुवादक - जया राठौड़
विद्या भवन सोसायटी

विद्या भवन प्रकृति साधना केन्द्र

चारदीवारी निर्माण

प्रकृति साधना केन्द्र के आस-पास पत्थर की चारदीवारी अस्थायी रूप से बनवाई गई। चारदीवारी बनने से केन्द्र पर बाहरी लोगों का प्रवेश तथा किसी भी प्रकार के कब्जे को रोकना है।

औषधीय पौधे रौपे

केन्द्र के पांच बीघा जमीन पर भारत विकास परिषद की ओर से औषधीय पौधे रौपे गए। केन्द्र पर ट्रैकिंग ट्रेल का रख-रखाव किया जा रहा है। इससे विद्यार्थियों को केन्द्र की वनस्पतियों आदि की जानकारी विशेषज्ञों द्वारा दी जा सकेगी।

केन्द्र का भ्रमण

विद्या भवन रामगिरि स्कूल के विद्यार्थियों ने केन्द्र का भ्रमण किया। विद्यार्थियों के साथ विद्यालय की प्राचार्य एवं अध्यापक-अध्यापिकाओं ने भी भाग लिया। सर्प विशेषज्ञ चमन सिंह ने विभिन्न प्रकार के सर्पों एवं उनसे व उनकी सुरक्षा के बारे में जानकारी दी। केन्द्र निदेशक डॉ. आर. एल. श्रीमाल ने विद्यार्थियों को केन्द्र पर पाई जाने वाली वनस्पति एवं उनकी उपयोगिता के बारे में जानकारी दी।

केन्द्र का रख-रखाव

केन्द्र के रख-रखाव के लिए भी प्रयास किए जा रहे हैं। इसी क्रम में केन्द्र पर स्थित कमरों के ऊपर की फाइबर शीट को हटाकर नई शीट लगवाने का प्रस्ताव सोसायटी को भिजवाया गया है।

रिपोर्टर : डॉ. रमणीक लाल श्रीमाल

...पृष्ठ 15 : वि. भ. शिक्षा संदर्भ केन्द्र का शेष

वर्तमान में एसजेवीएस कार्यक्रम चल रहा है। कार्यशाला का उद्देश्य कक्षा में गतिविधि आधारित शिक्षा का प्रत्यक्ष अनुभव देना था। जिसमें वीबीईआरसी की तीन सदस्यीय टीम ने सन्दर्भ समूह की भूमिका निभाई।

इंडिगो रीच कार्यक्रम

जुलाई से दिसम्बर की अवधि में शैक्षिक संवर्धन के 24 विद्यालयों में पढ़ने लिखने के प्रति रुचि बढ़ाने के उद्देश्य से विभिन्न गतिविधियां की गई। बच्चों के लिए इस साल नई किताबें खरीदी गई जिसमे विभिन्न स्तर की किताबें, कविता पट्टी खेल आदि शामिल थे। पुस्तकालय योजना में छात्रों को एक ऐसी कॉपी भी दी गई जो उन सभी नोटबुक से अलग है जो वे स्कूल में ले जाते हैं। यह प्रति उनके विचारों, विचारों को मुक्त लेखन या चित्र के रूप में लिखने के लिए है। इस नोटबुक का उपयोग करते समय संरचित लेखन की सीमाएं थोपी नहीं जाएंगी। इस विचार के बारे में सोचते हुए यहां की टीम ने इन कवर पेजों की कल्पना की और पिछले वर्षों की पठन गतिविधियों में संलग्न छात्रों की मूल तस्वीरों का उपयोग किया। इन प्रतियों को प्रोग्राम के विद्यालयों में कक्षा 6-8 के बच्चों में वितरित किया गया है। छात्रों ने अपनी तस्वीरों की पहचान की है और अपने शिक्षकों और साथी छात्रों के साथ खुशी साझा की। एक समूह में कुछ छात्रों को बांटते हुए हमसे पूछा 'मैम अगर हम अच्छे से पढ़ेंगे तो अगली बार हमारी फोटो भी आएगी। इन सब तैयारियों के साथ 3 लोगों की फील्ड टीम तैयार की गई जिसका मुख्य काम बच्चों के साथ कहानी कविता सुनना, लेखन कार्य करवाना आदि है। पुस्तकालय योजना के अंतर्गत जुलाई से सितंबर तक प्रत्येक विजिट में बच्चों के साथ पढ़ने लिखने की गतिविधि करवाना व पुस्तकें इशू करना शामिल था। काम के इन तीन महीनों में ये समझ आया की एक ही दिन में ये सारी गतिविधि करना बच्चों के सीखने की क्षमता ओर दिशा दोनों के बारे में कोई ठोस समझ बनाने के मौके नहीं दे पा रही थी। इस अवलोकन के साथ हमने अक्टूबर से दिसंबर तक की कार्य योजना में हर सप्ताह में एक खास तरह का काम करना शामिल किया। इस स्वरूप में एक महीने के चार हफ्ते कुछ इस प्रकार प्लान किए गए। पठन सप्ताह, लेखन सप्ताह, स्वः पठन लेखन व क्रिएटिव सप्ताह। इन सभी सप्ताह में बच्चों को पढ़ने व घर ले जाने के लिए किताबें देना शामिल था। इस बदलाव से हम प्रत्येक कक्षा में बच्चों के अलग अलग समूह बना कर उनके स्तरानुसार काम करने का मौका मिला। अपने सभी प्रयासों के साथ शीतकालीन अवकाश में 6 विद्यालय के लगभग 400 बच्चों के साथ अखबार पढ़ने, अपने क्षेत्रों की लोकल खबरें एकत्रित करना, अपने घर के बड़ों से बातचीत करते हुए अपनी भाषा की कहानियों व कविताएं सुनना व लिखना, नई नई कहानियाँ लिखना व गीत बनाने पर काम करना। इन सब गतिविधियों की मदद से सभी विद्यालयों में लोकल अखबार बनाए गए, बच्चों के गीत, कहानी व कविताओं के माध्यम से भित्ति पत्रिका भी बनाई गई।

रिपोर्टर : डॉ. कामिनी उपाध्याय

और प्रकाश की जरूरत सभी को है

प्रो. ग़ज़नफ़र, पूर्व निदेशक उर्दू शिक्षा अकादमी, जामीया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय। अभी सेवानिवृत, अलीगढ़ में रहते हैं।

रमा ट्रस्ट ने एक बड़ा महत्वपूर्ण काम शुरू किया है, सृजनात्मक लेखन कैसे विकसित करें? नौजवानों विशेषकर महिलाओं में जो रचनात्मक शक्ति है उसको कैसे बाहर लाया जाए, क्योंकि जो सृजनात्मकता है वह एक ऐसी शक्ति है जिससे जो तमाम नकारात्मक शक्तियां है, जो धुंध फैलाते हैं, अंधकार पैदा करते हैं उनसे लड़ा जा सके। जब इंसान सृजनात्मक हो जाता है तो उसका अहसास जिंदा हो जाता है, संवेदना शक्ति बढ़ जाती है, भावनाएं उसे नर्म बना देती है। और जब भावनाएं तीव्र हो जाती हैं तो वो आदमी दूसरों के दर्द को महसूस करने लगता है। जब वह दूसरों के दर्द को महसूस करता है तो उसको दूर करने की कोशिश भी करता है क्योकि वह किसी के होठों से निकली हुई चीज को सुन नहीं, तड़प को देख नहीं सकता, वह किसी को छटपटाता नहीं देख सकता।

आज इस सृजनात्मक लेखन की ज्यादा जरूरत है क्योकि संसार में छटपटाहट बढ़ गई है। इसलिए बढ़ गई है कि इसने अपने स्वार्थ के लिए अपने चारों तरफ अंधकार फैला दिया है। इस अंधकार में मुनष्य घुट रहा है, मानवता कराह रही है, इंसानियत आहें भर रही है और यह किसी एक जगह की बात नहीं है बल्कि सारा संसार इस तरह के घुटते हाल से गुजर रहा है।

रमा ट्रस्ट और उसके ट्रस्टियों ने यह महसूस किया कि दुनिया से अंधकार को दूर किया जाए ताकि छटपटाहट मिटे, आदमी सुकून की सांस ले सके, बिना भय के जी सके, एक-दूसरे के दर्द को महसूस कर सके, एक-दूसरे की तकलीफ को दूर कर सके, दूसरों को खुश रख सके और खुद भी खुश रह सके। इसी एहसास के कारण रमा ट्रस्ट ने सृजनात्मक लेखन का सिलसिला शुरू किया और हसूयत इस सिलसिले से महिलाओं को, नौजवान लड़कियों को इसलिए कि अगर इनमें सृजनात्मकता जागती है तो वह पुरुष के मुकाबले में ज्यादा लोगों को इसका लाभ पहुंचा सकती है क्योकि उनसे पूरा कुनबा जुड़ा होता है।

इस सिलसिले की यह दूसरी कड़ी है जिसमें 25 नौजवान लेखक शामिल हुए हैं। ये मुख्यतः हैं तो राजस्थान के मगर वो भारत के मुखालिक कोनों, शहरों में रहते हैं। पहली कड़ी ऑनलाईन शुरू हुई थी जिसमें चार भाषाओं हिन्दी, अंग्रेजी राजस्थानी एवं उर्दू के युवा लेखक शामिल हुए थे। इस कार्यशाला का एक फायदा यह हुआ कि विभिन्न इलाकों, भाषाओं और धर्मों के नौजवान एक जगह जमा हुए जिनसे राष्ट्रीय एकीकरण, कोमी एकता के जज्बे को भी बल मिला। लोगों ने एक-दूसरे के दर्द को साझा किया अपनी कहानियां पेश कीं, अच्छी कहानियां सीखने के अमल से गुजरे, नौजवान प्रतिभाएं उभर कर सामने आईं और नौजवानों में लिखने का कहानी कहने का जोश/जज्बा पैदा हुआ। क्योंकि कहानियां अंधेरों को मिटाती है, दुखों से छुटकारा दिलाती है, ज्ञानेन्द्रियों को जगाती है, मनुष्य के दिलों को कोमल बनाती है, उसके दिमाग को कुरान बक्शती है और हालात से मुकाबला करने के लिए शक्ति प्रदान करती है, तन्हाईया दूर करती है, घुटन को दूर करती है, अंदर के विचार को बाहर करती है, असामान्यता को हटा कर सामान्य बनाती है। कहानियां भाषा को शक्तिशाली बनाती है, भाषा में प्रेम रस घोलती है। प्रेम रस जो प्रीत की लहरें उभारता है, खुशी की तरंगे पैदा करता है, आदमी को आदमी से प्यार करना सीखाता है और मानवता को जिंदा रखने में मदद करता है।

इस ट्रस्ट ने सृजनात्मक लेखन का जो सिलसिला शुरू किया है इस सिलसिले को आगे बढ़ाना चाहिए और इसमें दूसरे प्रांतों को भी जुड़ना चाहिए। और प्रकाश की जरूरत सभी को है। मुझे आशा है कि रमा ट्रस्ट को शुरू किया ये सिलसिला आगे बढ़ेगा और दुनिया से अंधकार को दूर करने में बड़ा योगदान देगा। यहां के इस ट्रस्ट से जुड़े लोगों से मिलकर इस बात का अहसास हुआ कि ये ट्रस्ट जात-पात, धर्म, नस्ल सबसे ऊपर उठा हुआ ट्रस्ट है। इसके सामने मानवता है और मानवता के आगे सभी बराबर होते हैं। सभी के सुख के लिए यह ट्रस्ट काम कर रहा है और ये ऐसा काम कर रहा है जो सराहनीय है और इस काम को आगे बढ़ाने के लिए एक-एक आदमी को चाहिए कि वे योगदान दे और ये सिलसिला कभी न रुके।

मैं इस ट्रस्ट के लोगों का शुक्रिया अदा करता हूं मुझे भी इस सृजनात्मक लेखन कार्यशाला में शामिल होने का मौका दिया और नई नस्ल के नौजवान साथियों से बात करने और उनकों अपने तजुर्बात साझा करने का मौका दिया खास तौर पर मैं अजय साहब, मेघना जी, प्रियंका जी का शुक्र गुजार हूं कि इन्होंने ये बहुत ही खूबसूरत, महत्वपूर्ण कल्याणकारी कदम उठाया है और हम जैसे लोगों को भी इसमें योगदान देने का अवसर प्रदान किया है।

अतीत के झरोखे

विद्या भवन के प्रारम्भिक वर्षों के गुरु देवी लाल सामर

पद्मश्री देवीलाल सामर के षष्टि-पूर्ति-समारोह पर 1971 में डॉ. महेन्द्र भानावत द्वारा सम्पादित 'गेहरो फूल गुलाब रो' नामक अभिनन्दन ग्रंथ का प्रकाशन हुआ।

वहां से उद्धृत हैं देवीलाल सामर के विद्या भवन से जुड़े चयनित अंश।

सन् 1925 में देवीलाल सामर का संपर्क प्रसिद्ध शिक्षाविद् एवं प्रशासक डॉ. मोहन सिंह मेहता से हुआ, जो उन दिनों स्काउट आश्रम चलाते थे। भाई साहब ने अपने आश्रम में कई विद्यार्थियों को स्काउट बनाकर अच्छे नागरिक बनने की तालीम दी। स्काउट बनना बड़ा महत्त्वपूर्ण और गौरवप्रद समझा जाता था। सामर जी को डॉ. मेहता का पितृवत स्नेह मिला, साथ ही कैम्प फायर आदि में अपनी नाच-गान की शौकिया प्रतिभा को विकसित करने का अच्छा अवसर भी हाथ लगा।

सन् 1931 में डॉ. मेहता ने विद्या भवन की स्थापना की। भाई साहब के कहने पर सामर जी ने इसमें अपनी सेवाएं देनी प्रारम्भ कीं। छोटे से स्कूल के रूप में इसका प्रारम्भ देवगढ़ की हवेली (जहां आज रवीन्द्र नाथ टैगोर आयुर्विज्ञान महाविद्यालय है) में किया गया था। उन दिनों सामर जी के अतिरिक्त दो अध्यापक और थे। स्कूल में झाड़ू देने से लेकर पानी भरने, डाक डालने तथा चपरासी, क्लर्क का सारा काम भी ये ही लोग करते थे। धीरे-धीरे विद्या भवन का दायरा बढ़ता गया। सामर जी यहां हिन्दी और संगीत पढ़ाते थे। उन दिनों संस्थाओं की स्थापना के पीछे एक विशिष्ट लक्ष्य हुआ करता था- 'अच्छे होनहार प्रतिभाशाली बालक तैयार करना।' अतः शिक्षकों में भी ये बातें कूट-कूट कर भरी रहती थी, फलतः वे त्याग, आदर्श और निष्ठापूर्वक काम करते थे।

धीरे-धीरे सामर जी ने विद्या भवन में कई नई प्रवृत्तियां प्रारम्भ कर दी। इसमें विशिष्ट सांस्कृतिक अवसरों पर प्रदर्शित नृत्य नाटिकाएं उल्लेखनीय हैं। इन नृत्य नाटिकाओं से विद्या भवन की ख्याति को भी बल मिला। फलस्वरूप सामर जी ने 'विद्या भवन कला-मंडल' नाम से एक सांस्कृतिक मंच ही कायम कर दिया। महात्मा बुद्ध, मर्यादा पुरुषोत्तम राम, महात्मा गांधी, आदि मानव तथा कामायनी पर लिखे उनके पेजेण्ट विशेष चर्चित रहे। इनकी विशेषता यह थी कि इनमें एक साथ सौ-सौ डेढ़-डेढ़ सौ पात्र रंगमंच पर काम करते थे। सामर जी के इस प्रकार के बहुउद्देशीय नाट्य प्रयोग बड़े प्रख्यात हुए।

सामर जी ने अपना साहित्यिक जीवन भी विद्या भवन में ही प्रारम्भ किया। नाट्य लेखन के साथ-साथ गद्य गीतों की ओर भी उनकी लेखनी ने उच्च स्तरीय साहित्य-सृजन किया।'

सन् 1940 में प्रसिद्ध नृत्यकलाकार उदय शंकर उदयपुर आए। उनके प्रदर्शन से सामर जी बड़े प्रभावित हुए और ग्रीष्मावकाश में अल्मोड़ा में उनके पास प्रशिक्षण प्राप्त किया।

उनके मन में लोक कलाओं के उन्नयन एवं उत्थान के लिए किसी बड़े संगठन की स्थापना की बात घर कर गई। उन्होंने इक्कीस वर्षों की सेवा पश्चात् अपना त्याग-पत्र प्रस्तुत कर विद्या भवन छोड़ दिया। अंततोगत्वा 22 फरवरी, 1952 को भारतीय लोक कला मंडल की विधिवत स्थापना कर दी गई।

प्रस्तुति : डॉ. (श्रीमती) विश्व विजया सिंह
पूर्व प्रधानाध्यापिका- विद्या भवन स्कूल

प्रकाशक : विद्या भवन सोसायटी, डॉ. मोहन सिंह मेहता मार्ग, उदयपुर (राज.) फोन : 0294-2450911
E-mail : vbkhojkhabar@gmail.com; Website: www.vidyabhawan.in